महिला प्रभाव नेटवर्क
शिष्यता मैन्युअल

प्रस्तुतकर्ता:
एसोसिएशन फॉर इन्टरनैशनल
डिसाइपलशिप एड्वैन्समेन्ट (एइडा)
तथा **एजुकेशनल रिर्सोसेस**

नाम: .....

स्थान: .....

प्रांत: .....

दिनांक: .....

WIN DISCIPLESHIP MANUAL
(HINDI)

Copyright ©
Association for International Discipleship Advancement,
(AIDA), New Delhi, India
2014

यह मैन्युअल, *महिला प्रभाव नेटवर्क (विमेन्स् इम्पैक्ट नेटवर्क*-विन) के लिए पाठ्य-पुस्तक है, जो महिलाओं को आह्वान करने के लिए है कि वे मसीह की सच्ची शिष्या बनने के लिए अपने समर्पण को स्थापित/पुन:स्थापित करें, और तब उन्हें साहित्य तथा व्यावहारिक योजनाओं के द्वारा संघटित एवं सुसज्जित करे ताकि अन्य महिलाओं पर सक्रिय, बाइबल-आधारित आत्मिक निर्माण के लिए प्रभाव डालें - अविश्वासियों को मसीह की ओर अगुवाई करें और विश्वासियों को वचनबद्ध शिष्यता के लिए शिक्षा-सलाह दें।

Following are the names of those from ER/AIDA who have written material for this Discipleship Manual:

Rev. Shanta Rawate
Mrs. Rhonda Dragomir
Mrs. Caroline Akbar
Mrs. Sheba Baiju
Mrs. Martha Sparks
Rev. Stephen Liversedge
Rev. Roland Bowman
Rev. Paul Braun
Rev. Stephen Rawate

NOT FOR SALE: FOR PRIVATE CIRCULATION ONLY

Printed at : NEW LIFE PRINTERS (P) LTD, Delhi, Ph. : 011-27659883

विषय–सूची

- समर्पण

1. शिष्यता के लिए आदेश 1
2. शिष्या के गुण 7
3. बैतनिय्याह की मरियम: यीशु की अच्छी शिष्या 15
4. शिष्या की जीवनशैली 21
5. मसीह में 31
6. शिष्या तथा उसके संबंध 35
7. शिष्या तथा आत्मा–जीतना ..... .43
   - –आत्मा–जीतने के लिए तर्क 43
   - –गवाही कैसे दें 45
   - –पांच उंगलियों द्वारा सुसमाचार–प्रचार 48
   - –उद्धार का रोमी रास्ता 50
   - –शब्द–रहित पुस्तक 51
8. सामरी स्त्री: आत्मा जीतनेवाली/गवाह 57
9. नाओमी और रूत: अच्छी शिष्यता के लिए सलाह देना 63
10. प्रिस्किल्ला: शिष्य–बनानेवाली 69
11. विन तथा विनर्स 75
12. विन समूह का नेतृत्व करना 79
    - विनर्स 3X3 मुहिम प्रतिज्ञा 87
    - परिशिष्ट 88

समर्पण

थेल्मा ब्राउन, (जिन्हें हम *स्नेहपूर्ण शब्दों में "मम्मा" कहा करते थे*), अगस्त 13, 2009 को, अपने उम्र के 90 वर्ष पूरे होने के मात्र एक महीना पहिले, प्रभु के पास चली गईं। उन्होंने 13 वर्ष की आयु में ही तीन कलीसियाओं की पास्टर होकर प्रभु की सेवा करना आरंभ कर दिया था, और महाविद्यालय की पढ़ाई पूर्ण करने के पश्चात्, उन्होंने अपने पति डॉक्टर विलिस ब्राउन के साथ, अफ्रीका में 45 वर्षों तक मिशनरी होकर सेवकाई की।

मम्मा ब्राऊन ने ही भारत में एइडा की महिला सम्मेलन सेवकाई आरंभ की थी। यद्यपि अंतिम 3 वर्षों में वे पैन्क्रीऐटिक कैन्सर से पीड़ित थीं, तब भी उन्होंने भारत के अलग-अगल प्रांतो तथा नेपाल, बांग्लादेश और म्यान्मार की यात्रा की ताकि वहां कलीसियाओं की महिलाओं को गवाही देने एवं सुसमाचार-प्रचार करने के लिए तैयार करें। मंच पर उनकी उपस्थिति मात्र ही बहुत बड़ी प्रेरणा तथा संदेश हुआ करती थी।

निम्नलिखित टिप्पणियां प्रगट करती हैं कि उनके जीवन ने दूसरों पर क्या प्रभाव डाला था:

-"मैंने यह सीखा कि यदि मम्मा ब्राऊन इस उम्र में प्रभु की सेवा कर सकती हैं, तो मुझे कभी भी, कहीं भी, किसी भी दशा और किसी भी उम्र में प्रभु की सेवा करने के लिए तैयार रहना है।" (रेव्ह. जेन थॉमस, हिमाचल प्रदेश)

-"मैंने निश्चय किया है कि यदि मम्मा ब्राऊन सात समंदर पार आकर प्रभु की सेवा कर सकती है, तो मुझे भी कलीसिया में सेवा करते रहना चाहिए।" (रोशनी फिलिप्स, बनारस, उत्तर प्रदेश)

-"मम्मा ब्राऊन का सभा में सारा दिन बैठना और उनका हमारी सारी बातों के साथ मेल बिठाना इन बातों ने मुझे अत्याधिक प्रोत्साहित किया है कि मैं सुसमाचार की सेवा निरंतर करती रहूं।" (कैरोलीन अकबर, नागपुर, महाराष्ट्र)

मम्मा ब्राऊन के अंतिम संदेश में उनके शब्द थे, **"सुसमाचार-प्रचार का कार्य पूरा नहीं हुआ है। वह अभी भी पूरा होने का इन्तजार कर रहा है। इस पृथ्वी पर हमारे लिए सब से महान कार्य अपने प्रभु यीशु मसीह का संदेश फैलाना है, चाहे पेरू देश में या पश्चिम बंगाल में, या किसी भी देशों में, जहां कहीं प्रभु के विषय में सुनने के लिए लोग प्रतीक्षारत हैं। स्मरण रखिए, काम पूरा नहीं हुआ है। जबकि आप सुसमाचार फैलाने में हर संभव प्रयास करते हैं, परमेश्वर आपको आशीष दे!"**

निश्चय ही, सुसमाचार-प्रचार का कार्य अभी पूरा नहीं हुआ है! यीशु मसीह के हर एक शिष्य को उसका गवाह बनना अनिवार्य है। सच्ची शिष्या का यह अनिवार्य गुण है कि वह औरों को मसीह के पास लाती है। हमारी प्रार्थना है कि, परमेश्वर के अनुग्रह से सामर्थ पाकर, प्रत्येक "विनर" आत्मा-जीतनेवाली बने, परमेश्वर के लिए बहुत-सा फल लाए (यूहन्ना 15:1-2,6)।

1 शिष्यता के लिए आदेश

मुख्य पद: 1 कुरिंथियों 9:19

"सब से स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपने आप को सब का दास बना दिया है, कि अधिक लोगों को खींच लाऊं।"

यीशु का उसके शिष्यों को दिया गया अंतिम आदेश था, **"जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ"** (मत्ती 28:19)। *चेला* अर्थात् *शिष्य* शब्द का अर्थ *सीखनेवाला* होता है; वह जिसे सिखलाया गया है। वास्तव में, बाइबल के अनेक अंग्रेजी अनुवादों में यह वचन यूं दिया गया है: **"जाओ और सब जातियों को सिखाओ।"** वचन 20, इस सिखाने के उद्देश्य को स्पष्ट करता है: **"और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।"** मसीह यीशु के शिष्य वे हैं जो न मात्र उसकी शिक्षाओं को सीखते हैं परंतु उनका *पालन* भी करते हैं। इसलिए कि उसकी शिक्षाओं में महान आदेश भी आता है, सच्चे शिष्य वे ही हैं जो अंतत: *दूसरों को* शिष्य बनाते हैं और उन्हें वे सब बातें जो उसने आज्ञा दी हैं मानना सिखाते हैं।

यीशु की इस पृथ्वी पर की सेवकाई के दौरान, बहुतेरे थे जो उसके पीछे चलते थे। बहुत से लोग उसके पास आते थे कि वह बीमारों को चंगा करे (मत्ती 8:16)। बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लेती थी क्योंकि उन्होंने उसके आश्चर्यकर्म देखे थे (यूहन्ना 6:2)। बहुतेरे जो उसके पीछे हो लिए थे कि उसके शिष्य बने, अंतत: उसे छोड़कर वापस चले गए थे (यूहन्ना 6:66)। तथापि, उसके सच्चे शिष्य वे थे जो अपना सबकुछ छोड़कर, उसके पृथ्वी पर के जीवन भर, और अपने जीवन भर भी, उसके पीछे-पीछे चलते रहे (मरकुस 10:28)। वे उसके पीछे-पीछे चलते रहे, और घनिष्ठता से उसके साथ रहे, उससे गहन सत्य को सीखा, और उसके लिए "मनुष्यों को पकड़नेवाले बने" (मत्ती 4:19)।

अमेरीकन ट्रैक्ट सोसाइटी डिक्शनेरी (शब्दकोश) के अनुसार, "अब मसीह के

शिष्य की परिभाषा यह हो सकती है कि शिष्य वह है जो मसीह के सिद्धांतो में विश्वास करता है, उसके बलिदान पर निर्भर रहता है, उसके आत्मा को ग्रहण करता है, उसके नमूने का अनुकरण करता है, और उसका काम करने के लिए जीता है।" इस परिभाषा से यही सिद्ध होता है कि शिष्यता उद्धार के बाद का अगला कदम है; उद्धार शिष्य बनने का आरंभ मात्र है। व्यक्ति उद्धार पाने के लिए मसीह यीशु में विश्वास करता है। उद्धार **"विश्वास के द्वारा"** मात्र **"अनुग्रह ही से"** है; **"और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है"** (इफिसियों 2:8)। परंतु शिष्यता की प्रक्रिया इस निमित्त ठहराई गई है कि हम उद्धार के बाद के जीवन को अपने उद्धारकर्ता प्रभु के आदर्श तथा आज्ञाओं के सांचे में ढाल सकें और विश्वासयोग्य रहकर उसकी सेवा तब तक करते रहें जब तक मृत्यु हमें उसकी उपस्थिति में न पहुँचा दे।

शिष्यता विश्वासी से अनुशासन तथा समर्पण की मांग करती है। शिष्यता में सीखना और सिखाना दोनों का समावेश होता है। शिष्य बनानेवाला सिखाता है, जो शिष्य बनता है वह सीखता है। चारो सुसमाचारों में हम पढ़ते हैं कि यीशु कैसे अपने शिष्यों को सिखाता था; प्रेरितों के काम में हम पढ़ते हैं कि नये विश्वासी कैसे लगातार प्रेरितों के द्वारा मसीह के वचन में सिखाए जाते थे। शिष्यों ने शिष्य *बनाए* थे; और वे ही सब मसीही कहलाए गए थे (प्रेरितों 11:26)। शेष नया नियम मसीही शिष्यों के लिए परमेश्वर का वचन था (और है)। इस रीति से, शिष्यता मसीह के द्वारा दिए गए नमूने के अनुसार जीना, पवित्र शास्त्र में वर्णन की गई जीवनशैली को अपनाना है।

हमें उद्धार *मात्र परमेश्वर* के द्वारा मिलता है, इसके विपरीत शिष्यता *हमारे और परमेश्वर* के बीच की भागीदारी है। जब हम परमेश्वर के द्वारा उद्धार पाते हैं, हम परमेश्वर के पवित्र आत्मा के द्वारा भरे जाते हैं जो हमें परमेश्वर को प्रसन्न करनेवाला जीवन जीने के योग्य बनाता है (यूहन्ना 14:26; प्रेरितों 5:32; 1 कुरिंथियों 12:3ख)। जबकि हम अपने उद्धार के लिए *कुछ नहीं* कर सकते, शिष्य बनने के लिए हमें अवश्य ही *कुछ करना* है, जबकि पवित्र आत्मा हमें उस योग्य बनाता है। बाइबल बताती है कि पवित्र आत्मा मसीह की गवाही देगा, और उसकी महिमा करेगा (यूहन्ना 15:26; 16:13-14)। हम तब तक अच्छे शिष्य नहीं बन सकते जब तक हम पवित्र आत्मा के साथ एक सक्रिय भागीदारी एवं सहयोग में नहीं हैं। वही हमें शिष्यता की आवश्यक बातों को करने की सामर्थ देता है। ऐसा वह परमेश्वर के वचन को हमारे जीवन में काम में लाते हुए करता है (यूहन्ना 16:13-15)।

यदि *आप* परमेश्वर के वचन की शिक्षा पाते हुए, और पवित्र आत्मा की सहायता से, यीशु मसीह की शिष्या बनना चाहती हैं तो *आप* वह सब सीखती और

पालन करती हैं जिसकी आज्ञा एक शिष्य बनने के लिए दी गई है। वह *आप* ही हैं जो अपना क्रूस उठाती हैं, अपने आप का इन्कार करती हैं ताकि मसीह के पीछे हो लें (मरकुस 8:34)। वह *आप* ही हैं जो परमेश्वर की उद्धार करनेवाली दया को जानने और अनुभव करने के बाद, अपने शरीरों को जीवित, पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान चढ़ाती हैं (रोमियों 12:1)। वह *आप* ही है जो संसार से तथा संसार में की वस्तुओं से प्रेम करना बंद करती हैं (1 यूहन्ना 2:15)। वह *आप* ही है जो निर्णय करती हैं और अपने आप को अनुशासित करती है कि इस संसार की आदतों, रीति-रीवाजों, तत्वज्ञानों या प्रथाओं के सदृश्य न बनें परंतु पूरी तरह से परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार जीए (रोमियों 12:2)। जब आप अपने आप को समर्पित करती है और पवित्र आत्मा को अनुमति देती है कि आप में "मसीह के समान" जीवनशैली निर्माण करने हेतु कार्य करे, तब परमेश्वर, जिसने आप में उद्धार का अच्छा काम आरंभ किया है, उसे निश्चय ही पूरा करेगा (फिलिप्पियों 1:6)। और आपकी शिष्यता का फल मात्र आपका मसीह-समान चरित्र ही नहीं होगा परंतु बहुतेरे वे शिष्य भी होंगे जिन्हें आप "मनुष्यों को पकड़नेवाले" बनाओगी। आपके शिष्यता की जीवनशैली आपको शिष्य बनानेवालियां बनाएगी, और आप अपने आप का पुनरुत्पादन करेंगी (फल उत्पन्न करेंगी) कि और अधिक सच्चे शिष्य बनाए जाएं।

हमारी संस्कृति में, मसीहियों के अल्प प्रतिशत के साथ, हमारे पास बहुसंख्यक तक पहुंचने का बड़ा भारी काम है -*सब जनजातियों और लोक-समूहों और भाषाओं तक* पहुंचना है, ताकि खोए हुओं को अनंत नाश के संकट से छुड़ाएं और उन्हें मसीह के शिष्य बनाएं। तथापि, हमारे देश का वर्तमान दृश्य तीन चुनौतियों को दर्शाता है:

(1) जनसंख्या: "भारत में, संसार के किसी भी भाग की तुलना में, ऐसे जन-समूहों की संख्या बहुत बड़ी है जिनके मध्य मसीही विश्वासी, कलीसिया या कार्यकर्ता नहीं हैं। . . . संसार के किसी भी भाग में सुसमाचार-न-पाए-हुए लोगों का ऐसा बड़ा जमाव कहीं नहीं है।" (*ऑपरेशन वर्ल्ड, 7वां प्रकाशन*, 2010, पृष्ठ 405-417)। पूर्णकालीन सुसमाचार-प्रचारकों तथा पास्टरों की वर्तमान संख्या के द्वारा इस काम को पूरा नहीं किया जा सकता।

(2) लिंग भेद की स्थिति: भारत की महिलाएं, घर और बाहर अपनी सुरक्षा तथा अपने स्वास्थ्य के प्रति बढ़ते हुए खतरे से, अपनी स्वतंत्रता को लेकर लगातार भय का सामना करती हैं। आज आधुनिक जीवनशैली में परिवर्तित होने के दिनों में भी, अनेक हैं जो अपने आप को असहाय और आशाहीन महसूस करती हैं। वे रोती हैं, वे मांग करती हैं, वे कानून के आगे अपील करती हैं। वे अपने अधिकारों की

पहचान के लिए, सम्मान पाने एवं अपने महत्व को स्वीकार किए जाने के लिए संघर्ष करती हैं। परंतु वे नहीं समझती कि उनकी प्राथमिक आवश्यकता, निस्सन्देह, आत्मिक एवं अनंत स्वरूप की है। कौन उन्हें **उस एक** का प्रकाश दिखाएगी जिसने उनके लिए अपने प्राण दिए और उन्हें सच्ची प्रतिष्ठा देने के लिए जीवित है?

(3) ज्ञान की कमी: परमेश्वर इन दिनों में बड़े सामर्थ्य के साथ काम कर रहा है और बहुतेरे यीशु मसीह के पास आ रहे हैं। नये विश्वासियों में महिलाओं का प्रतिशत बहुत बड़ा है जिन्हें मसीह की शिष्या बनने की शिक्षा देना आवश्यक है। गंभीर मूल्यांकन करने पर स्पष्ट होता है कि यद्यपि वे परमेश्वर की भलाई पर विश्वास करने में वृद्धि कर रही हैं तौभी उनके बीच परमेश्वर के वचन के शिक्षा की कमी है। इसी कारण से, उनमें से अनेक, जब जीवन में क्लेश और विरोधियों के द्वारा सताव बढ़ता है तो अपने विश्वास को त्याग देती हैं। दूसरी ओर, यदि सच्ची शिष्या बनने के लिए उन्हें प्रशिक्षित किया जाए तो वे परमेश्वर के राज्य के लिए मधुमक्खियों की तरह सुनियोजित, परिश्रम करते हुए औरों को मसीह के पास लाने हेतु तैयार की जा सकती हैं।

अत: हमें परमेश्वर के लिए और अधिक मजदूरों की, और अधिक मसीह के गवाहों की, तथा महिलाओं के मध्य और अधिक शिष्य-बनानेवालियों की आवश्यकता है। कलीसिया के अनेक अगुवों ने यह समझा है और व्यक्त किया है कि महिलाएं पुरुषों से बेहतर तथा अधिक प्रभावकारी सुसमाचार-प्रचारक हैं, विशेषत: इसलिए क्योंकि वे न मात्र महिलाओं तक परंतु बच्चों, युवाओं तथा वृद्धों तक भी पहुंच सकती हैं। शिष्य-बनानेवालियों के रूप में महिलाओं का संभवनीय प्रभाव बहुत बड़ा है।

यह कार्य अति आवश्यक है और यह हमें बाध्य करता हैं कि हम दो बातें करें: **प्रथम,** आवश्यक है कि हम प्रार्थना पूर्वक स्वयं का मूल्यांकन करें और अपने जीवन को मसीह की सच्ची शिष्या होने के लिए पुन: समर्पित करें (यूहन्ना 8:31)। **द्वितीय,** आवश्यक है कि हम अपने आप को उत्साही गवाह तथा शिष्य-बनानेवालियां होने के लिए वचनबद्ध करें। इन दोनों कर्तव्यों को पूरा करने के लिए ही **महिला प्रभाव नेटवर्क "विन"** (Women's Impact Network -"WIN") की योजना बनाई गई है। वे सारी महिलाएं जो **विन** (WIN) में भाग लेंगी वे महान आदेश को पूरा करने में सहभागी होंगी। *आपको परमेश्वर ने चुना है!* इससे बढ़कर और कोई विशेष लाभ नहीं है।

विन (WIN) ऐसी कल्पना करता है कि मसीही महिलाएं गहरी शिष्यता का आह्वान स्वीकार किए हुए, दूसरी महिलाओं के जीवन में सक्रिय

आत्मिक निर्माण करने का संकल्प किए हुए हैं कि परिणामस्वरूप वे भी सशक्त शिष्य-बनानेवालियां बनेंगी। आओ हम विनर्स (WIN-ners) बनें!

इस कामना के साथ कि सारी महिमा उस परमेश्वर को मिले,
जिसका अनुग्रह ही मसीह के शिष्यों के जीवन में
सारे भले कामों का आधार है,
मसीह के निमित्त आपके,

*–**विन** का दर्शन देखनेवाले साथी*

टिप्पणियां

2 शिष्या के गुण

मुख्य पदः कुलुस्सियों 1:10

". . . तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो,
और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे,
और तुम परमेश्वर की पहचान में बढ़ते जाओ . . . ।"

प्रस्तावना

1. बहुतेरे हैं जो यीशु में विश्वास करते हैं, परंतु शिष्या वह है जो उससे प्रेम करती है और घनिष्ठता से उसके पीछे-पीछे चलती है।
   क. भीड़-की-भीड़ यीशु के पीछे चली आती थी कि भोजन, आश्चर्यकर्म, चंगाई, छुटकारा और राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त करें। क्या वे यीशु के शिष्य थे (यूहन्ना 6:14-15)?
   ख. बारह प्रेरितों ने अपने व्यक्तिगत जीवन को त्याग दिया था कि यीशु के साथ रहे और उसके पीछे-पीछे चलें। क्या वे शिष्य थे (मत्ती 4:19-20)?
2. इस पाठ में हम यीशु मसीह की सच्ची शिष्या के गुणों को खोजेंगे और स्वयं एक सच्ची शिष्या बनना सीखेंगे।

यीशु मसीह की सच्ची शिष्या के गुण

1. सच्ची शिष्या ***परमेश्वर से अन्य सब प्रेमों से बढ़कर प्रेम करती है*** (लूका 14:16-26)।
   क. परमेश्वर के प्रति प्रेम एक शिष्या के जीवन का प्रमुख गुण होता है। हमारा यीशु मसीह के प्रति जो प्रेम है उसके साथ किसी और प्रेम की बराबरी नहीं होनी चाहिए। हमारा यीशु से जो प्रेम है वह उस

प्रेम से भी बढ़कर होना चाहिए जो हम स्वयं से करते है; हमें उससे अपने स्वयं की इच्छाओं और सपनों, हमारे शौक और आदतों, हमारे आराम और हमारी प्रसन्नता से बढ़कर प्रेम करना चाहिए।

ख. शिष्या का जो प्रेम यीशु के प्रति होता है उसकी तुलना में अन्य प्रेम घृणा के समान होते हैं।

- हम जानते हैं कि हमें सचमुच अपने परिवारों से घृणा नहीं करनी है। उदाहरण के लिए, पतरस सेवकाई करते समय अपनी पत्नी को साथ ले आया था (1 कुरिंथियों 9:5)।
- हम जानते हैं कि हमें अपने घराने के सदस्यों की देखभाल-चिंता करनी है। बाइबल कहती है कि जो ऐसा नहीं करता वह "अविश्वासी से भी बुरा" बन गया है। (1 तीमुथियुस 5:8)।
- नीतिवचन 31:10-31 महिलाओं को प्रोत्साहित करता है कि वे सच्चरित्र एवं परमेश्वर के भय के साथ अपने परिवारजनों की अच्छी देखभाल करनेवाली बनें। नया नियम के वचन, 1 तीमुथियुस 2:9-10 और 1 पतरस 3:1-6, पुराना नियम के इस प्रोत्साहन के लघु-रूप हैं।
- लूका 14:26 में प्रयोग किए गए "अप्रिय जाने" शब्द का सरल अर्थ *कम प्रेम करना* है। हमें अपने परिवार तथा रिश्तेदारों से उससे कम प्रेम करना है जितना हम मसीह यीशु से करते हैं।
  - हमें मसीह यीशु को और उसके काम तथा वचन को अपने परिवार और रिश्तेदारों से अधिक प्राथमिकता देनी है।
  - हमें उन्हें छोड़ने के लिए भी तैयार रहना है यदि उसका सुसमाचार प्रचार करने के लिए वह हमें बुलाता है।
  - यदि वह उन्हें हम से ले लेता है तो हमें बिना कुड़बुड़ाहट के उसकी इच्छा को स्वीकार करना है।

ग. यीशु ने मत्ती 10:37 में इसी सत्य पर कुछ अधिक कठोर शब्दों में जोर दिया है। इस वचन को यूं समझना चाहिए कि हमें मसीह यीशु से सर्वोच्च प्रेम करना है। यदि नहीं, तो हम उसकी शिष्या या मसीही समझे जाने के योग्य नहीं हैं।

घ. जो शिष्या यीशु को अपने जीवन में सर्वप्रथम स्थान देती है वह पुरस्कार पाएगी (मत्ती 6:33; मरकुस 10:28-30)।

2. सच्ची शिष्या अपना क्रूस उठाती है (लूका 14:17; मरकुस 8:34-35)।

क. प्रथम कलीसिया में, आज के विपरीत, क्रूस मृत्यु का लक्ष्य था। यदि कोई स्त्री चुनाव और निश्चय करती है कि वह यीशु की शिष्या बनेगी तो उसे प्रतिदिन अपना क्रूस उठाना है।

ख. यह पौलुस के समान सोच रखना है, "मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है" (फिलिप्पियों 1:21)। उसे यीशु मसीह और उसके काम के लिए अपने प्राण देने के लिए भी तैयार रहना है।

ग. उसे अपनी शारीरिक लालसाओं को नियंत्रण में करने के लिए अपने आप का इन्कार करना अवश्य है। मसीह की शिष्या को संसार का आनंद और समृद्धि की चाहत नहीं रखनी चाहिए परंतु अनुशासित बनना है। उसे सतत अपने स्वार्थ का त्याग करना है और मसीह के लिए सब बातों का, सांसारिक आराम और सुखों का भी, त्याग करने के लिए तैयार रहना है।

घ. उसे अपने परिवार की जिम्मेवारियों के भार को उठाने के साथ-साथ, उस हर एक बोझ को भी साहस और आनंद के साथ उठाना है जो परमेश्वर उस पर मसीही सेवकाई के लिए सौंपता है।

- ऐसा करने में, यह महत्वपूर्ण है कि शिष्या इसमें फर्क समझे कि परमेश्वर द्वारा सौंपे गए बोझ कौनसे हैं और उसके अपने किसी पापमय गलती के कारण या दूसरों के द्वारा लादे गए बोझ कौनसे हैं।
- शिष्या मसीह यीशु के साथ जूअे में जोती गई है (मत्ती 11:30)। जब बोझ बहुत भारी लगे तब आवश्यक होता है कि शिष्या मसीह से बुद्धि और सहायता के लिए प्रार्थना करे कि पाप के कारण बढ़े हुए बोझों को उतार फेंक सके और जिन बोझों को उठाने में वह सहायता करता है उन्हें अच्छे से उठाने में सामर्थी बनाई जाए।

3. सच्ची शिष्या मसीह के पीछे हो लेती है (लूका 14:27)।

क. मसीह के पीछे चलने का अर्थ उसकी आज्ञाओं को मानना है। जो कोई मसीह से प्रेम करती है वह उसकी आज्ञाओं का पालन करेगी। और जो कोई उसकी आज्ञाओं का पालन करती है वह उसके प्रेम

में बनी रहती है (यूहन्ना 14:23; 15:10)।

ख. मसीह के पीछे चलने का अर्थ उसके नमूने का अनुकरण करना है। सच्ची शिष्या निरंतर मसीह के जीवन एवं शिक्षाओं पर मनन करती रहती है। वह इस आदत में बनी रहती है कि प्रतिदिन अपने जीवन को उसके नमूने के अनुसार सुधारे और ठीक करे (फिलिप्पियों 2:4)।

ग. मसीह के पीछे चलने का अर्थ अपने-आप को उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए पूर्णत: समर्पित करना है। पुन:, यह पौलुस के समर्पण के समान है जिसने कहा था, "मेरे लिए जीवित रहना मसीह है" (फिलिप्पियों 1:21)।

घ. मसीह के पीछे चलने का अर्थ प्राण देने तक उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहना है। शिष्या अपने मसीह के विश्वास में दृढ़ बनी रहती है, इस निश्चय के साथ कि वह कभी भी उसका इन्कार नहीं करेगी। स्मरण रखिए, इनाम उसे नहीं मिलता जो दौड़ को मात्र आरंभ करती है, परंतु उसे मिलता है जो समाप्त करती है (फिलिप्पियों 3:11-14; प्रकाशितवाक्य 2:10)।

4. सच्ची शिष्या अपनी सम्पत्ति का त्याग करने के लिए तैयार रहती है (लूका 14:33; मरकुस 10:21)।

क. शिष्या अपने जीवन की स्वामीनी नहीं होतीं; परंतु वे उसकी मात्र भंड़ारी होती हैं (1 कुरिंथियों 6:19)।

ख. बैतनिय्याह की मरियम ने जटामांसी के बहुमूल्य इत्र को (अपनी बहुत कीमती सम्पत्ति को) यीशु के पांवों पर उंड़ेल दिया था (यूहन्ना 12:3)।

ग. धनी युवक सरदार में एक बात की घटी थी: उसने यीशु से अधिक अपनी सम्पत्ति से प्रेम किया। अत: वह यीशु के पीछे चल नहीं सका (मरकुस 10:21-22)।

5. सच्ची शिष्या परमेश्वर के वचन को जानती है और वचन में बढ़ती जाती है (यूहन्ना 8:31)।

क. बहुतेरे जो मसीह के पीछे चलने लगे थे वे पहले यीशु पर विश्वास करते थे, परंतु बाद में लौट गए थे (यूहन्ना 6:6)। यीशु ने घोषणा

की थी कि शिष्य वह है जो उसके वचन में लगातार बने रहता है। मसीह के प्रति हमारे प्रेम की सच्ची परख हमारा उसके वचन में निरंतर विश्वास करना और बढ़ता हुआ आज्ञापालन है।

ख. शिष्या परमेश्वर के वचन को वैसे ही चाहती है जैसे एक नये जन्मे बालक को दूध की लालसा रहती है (1 पतरस 2:2)।

ग. शिष्या को जीवित रहने के लिए परमेश्वर के वचन के भोजन की आवश्यकता होती है - ताकि आत्मिक रीति से बढ़े और शैतान को पराजित करने के लिए सक्षम बने। परमेश्वर के वचन से पोषित होने के द्वारा हम मसीह से पोषित होते हैं (मत्ती 4:4; यूहन्ना 6:35)।

घ. मसीह की शिष्या उसके जूअे को ले लेती है और उससे सीखती है कि उसकी आज्ञाओं का पालन कैसे करे और उसके वचन में प्रगट की गई उसकी इच्छा को कैसे पूरा करे (मत्ती 11:29-30)।

6. सच्ची शिष्या पवित्र जीवन जीने के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास करती रहती है (1 पतरस 1:15)।

क. परमेश्वर ने मसीह के शिष्यों को पवित्र जीवन जीने के लिए बुलाया है (1 थिस्सलुनीकियों 4:7)।

ख. हमारे उद्धार के समय हम मसीह यीशु में पवित्र किए गए हैं और निरंतर पवित्र बनते जाने के लिए बुलाए गए हैं (1 कुरिंथियों 1:2)।

ग. "पवित्र" शब्द का अर्थ यह है कि हम हमारे आसपास के अविश्वासियों की जीवनशैली से अलग किए गए हैं, और परमेश्वर तथा उसके मनोरथ के प्रति सेवानिष्ठ हैं। जो शिष्या है उसे उनसे भिन्न होना अवश्य है जो शिष्या नहीं हैं; वह जीवित, पवित्र परमेश्वर के प्रति समर्पित है।

घ. पवित्रता इस बात का प्रमाण है कि शिष्याओं के जीवन में परमेश्वर का उद्धार और उसकी उपस्थिति है (1 यूहन्ना 3:6-9)।

7. सच्ची शिष्या अन्य शिष्यों से प्रेम करती है (यूहन्ना 13:34-35)।

क. प्रथम कलीसिया में भाईचारे का प्रेम उनकी विशिष्ट पहचान का ऐसा गुण था कि उनका वर्णन करते हुए एक इतिहासकार ने कहा था, "वे एक-दूसरे को जानने के पहले ही प्रेम करते है।" ऐसा प्रेम उनकी गवाही है कि वे मसीह का अनुकरण करनेवाले है।

ख. शिष्य एक-दूसरे से प्रेम करते हैं क्योंकि उन्होंने मसीह यीशु में तथा मसीह यीशु के द्वारा प्रगट किए गए परमेश्वर के महान प्रेम को पहचाना है।

ग. हर एक महिला जिसने विश्वास किया है कि यीशु ही मसीह है वह परमेश्वर की संतान बन गई है। और हर एक जो परमेश्वर से प्रेम करती है, वह उसकी संतानों से भी प्रेम करती है (1 यूहन्ना 5:1)।

घ. "प्रेम" शब्द के लिए यूनानी भाषा में तीन शब्द हैं- *"इरोज, फिलिओ, अगापे।"* यूहन्ना की पहली पत्री में जो शब्द प्रयोग किया गया है वह *"अगापे"* है, जिसका अर्थ नि:स्वार्थ प्रेम होता है। शिष्याओं को एक-दूसरे से परमेश्वर के नि:स्वार्थ प्रेम से प्रेम करना है (1 यूहन्ना 3:16-18)। यही प्रेम सुरक्षा की भावना को निर्माण करते हुए सच्ची संगति की ओर अग्रसर करता है।

8. सच्ची शिष्या बहुत-सा फल लाती हैं (यूहन्ना 15:5)।

क. परमेश्वर दाख की बाग का किसान है, यीशु दाखलता है और शिष्य डालियाँ है जो फल लाने के निमित्त ठहराई गई हैं। जो फल नहीं लातीं वे काट डाली जाती हैं और जला दी जाएँगी परमेश्वर के लिए फल लाना मसीही शिष्यता की खरी परख है (यूहन्ना 15:1-2,6)।

ख. "बहुत फल फलता" का अर्थ भले कामों में फलदाई होना, सदा बहुतायत से परमेश्वर के काम करते रहना है। हमारा विश्वास, हमारा परिवर्तन और हमारा अनंत उद्धार हमारे कामों के कारण नहीं हैं परंतु ये सब परमेश्वर के अनुग्रह के मुफ्त दान हैं। तथापि, हमारे नये जन्म के द्वारा, हम परमेश्वर के बनाए हुए और मसीह यीशु में उन भले कामों को करने के लिए सृजे गए हैं जिन्हें उसने पहले से ही हमारे करने के लिए तैयार किया है (इफिसियों 2:10)।

ग. शिष्या आत्मा के फलों को प्रगट करती है (गलातियों 5:22-25)।

घ. शिष्यों से शिष्य उत्पन्न होते हैं - शिष्याएं औरों को मसीह के पास लाती हैं और उन्हें वे सब बातें मानना सिखाती हैं जो उसने आज्ञा दी है (मत्ती 28:18-20)।

उपसंहार

1. यीशु हमें उसकी शिष्या बनने के लिए - और शिष्य बनानेवाली होने के लिए - बुलाता है। दु:खद बात है कि सब "मसीही" शिष्य नहीं हैं।

2. शिष्या अनुशासित होती है; इसका अर्थ यह हुआ कि विश्वासिनी वही करती है जो उसका प्रभु चाहता है, न की जो वह स्वयं चाहती है।

3. शिष्या जानती है कि वह दाम चुका कर मोल ली गई है और उसका जीवन उसका अपना नहीं है, परंतु परमेश्वर का है।

4. यीशु शिष्या का प्रभु है, अर्थात्, उसके जीवन का स्वामी और एकमात्र मालिक है।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. सच्ची शिष्या सब प्रेम से बढ़कर परमेश्वर से प्रेम करती है। जीवन की कौनसी बातें शिष्या के लिए परीक्षा का कारण हो सकती हैं कि परमेश्वर से अधिक उनसे प्रेम करे?

2. आप लोगों के लिए कौनसी बातें कर रही हैं जिससे प्रगट होता है कि आप परमेश्वर से प्रेम करती हैं? आप वे कौनसी बातें कर रही हैं जिससे प्रगट होता है कि आप दूसरों से प्रेम करती हैं?

3. क्या आप इस समय किसी को शिष्यता सिखाने के द्वारा फल लाने में सक्रिय है? क्या पिछले माह में आपने किसी को मसीह का सुसमाचार सुनाया और उन्हें मसीह के लिए जीता है? यदि नहीं तो क्यों नहीं?

प्रार्थना

प्यारे पिता, मेरी सहायता कर कि मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की सच्ची शिष्या बनूं, ताकि मैं उससे सर्वोच्च प्रेम करूं और अपने आप का पूरा-पूरा इन्कार करूं कि सम्पूर्ण मन से उसके पीछे चलूं। उसके लिए सबकुछ त्याग देने के लिए, अपना प्राण भी, मैं सर्वदा तैयार रहूं और उसके वचन में बनी रहूँ ताकि तेरे लिए बहुत-सा फल लाऊँ । आमीन।।

टिप्पणियां

3 बैतनिय्याह की मरियम: यीशु की अच्छी शिष्या

मुख्य पद: यूहन्ना 12:3

"तब मरियम ने जटामांसी का आधा सेर बहुमूल्य इत्र लेकर यीशु के पांवों पर डाला, और अपने बालों से उसके पांव पोंछे, और इत्र की सुगंध से घर सुगन्धित हो गया।"

पवित्र शास्त्र के वचन जो बैतनिय्याह की मरियम का वर्णन करते हैं: लूका 10:38-42; यूहन्ना 11:1-45; यूहन्ना 12:1-8

पवित्र शास्त्र के वचन जो बैतनिय्याह की मरियम का नाम न लेते हुए उसका उल्लेख करते हैं: मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9

बैतनिय्याह की मरियम के सात गुण जो हमें बताते है कि अच्छी शिष्या कैसे बनें:

1. **मरियम की यीशु से व्यक्तिगत मित्रता थी।**

   क. मरियम, उसकी बहन मार्था तथा उसके भाई लाजरस ने यीशु को अपने घर में सहर्ष स्वीकार किया था (लूका 10:38-39)।

   ख. मरियम का यीशु पर भरोसा था। उसका विश्वास था कि यीशु एक सच्चा मित्र था जो उनकी सहायता करना चाहता था। उसे निश्चय था कि उसके भाई की मृत्यु के समय उसने उनकी सहायता अवश्य की होती (यूहन्ना 11:32)।

   ग. मरियम का विश्वास था कि यीशु में महान सामर्थ्य थी, इतनी की वह उसके भाई की मृत्यु को रोक सकता था (यूहन्ना 11:32)।

   शिष्या होने की प्रथम आवश्यकता यीशु को व्यक्तिगत रीति से जानना है। आवश्यक है कि हम अपने पापों से पश्चाताप करें और

यीशु को अपने जीवन में सहर्ष स्वीकार करें। दूसरी आवश्यकता उस पर भरोसा रखना है।

2. मरियम ने यीशु के चरणों में स्थान ग्रहण किया था।

क. मरियम प्रभु के चरणों में बैठकर उन बातों को सुन रही थी जो वह सिखा रहा था। *शिष्या परमेश्वर के वचन बाइबल का अध्ययन करती है, प्रार्थना करती है और परमेश्वर के निर्देशों को सुनती है* (लूका 10:39)।

ख. मरियम नम्रता पूर्वक यीशु के चरणों में गिर पड़ी, जब वह अपने भाई लाजरस की मृत्यु हो जाने के बाद उससे मिली थी। मरियम ने विश्वास किया था कि परमेश्वर में सारी सामर्थ्य है और उसने नम्रता पूर्वक परमेश्वर की सहायता मांगी थी। *शिष्या अपनी हर एक आवश्यकता के लिए यीशु के चरणों में आती है* (यूहन्ना 11:32)।

ग. मरियम ने यीशु के पांवों पर इत्र उंड़ेला और अपने बालों से उसके पांव पोंछे। *शिष्या यीशु की आराधना करती है* (यूहन्ना 12:3)।

3. मरियम अपने विश्वास को अपने प्रतिदिन के जीवन में लागू करती थी।

क. यीशु की शिष्या होने के साथ ही मरियम एक परिवार की सदस्या थी। वह अपने प्रतिदिन की दिनचर्या में यीशु के लिए जीती थी (लूका 10:38-42)।

ख. यीशु की सच्ची शिष्या होना मरियम को अपने परिवार के ही एक सदस्य द्वारा अनुचित रीति से दोष लगाए जाने से बचा नहीं सका था (लूका 10:38-40)।

ग. यीशु की सच्ची शिष्या होना मरियम को जीवन की समस्याओं से बचा नहीं सका था (यूहन्ना 11:1-44)।

घ. यीशु की शिष्या होना उसे कठोर सार्वजनिक आलोचना से बचा नहीं सका था (मत्ती 26:8-9; मरकुस 4:4-5; यूहन्ना 12:4-6)।

यीशु की शिष्या अपने आप का इन्कार करती है और परमेश्वर में पूरा विश्वास रखते हुए अपने प्रतिदिन के जीवन में परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार करती है।

4. मरियम अपने कार्यों के द्वारा जानी गई थी।

क. यीशु के द्वारा बुलाए जाने की बात सुनते ही, मरियम तुरंत वहाँ उसके पास गई जहाँ वह था। *एक शिष्या जैसे ही जानती है कि उसके लिए यीशु की इच्छा क्या है, वह तुरंत उसकी आज्ञा का पालन करती है* (यूहन्ना 11:28-29)।

ख. यीशु को मरियम ने अपनी सब से बहुमूल्य वस्तु दे दी थी। *यीशु ने हमारे लिए इतना कुछ किया है; वह इस योग्य है कि हम उसके लिए अपने सर्वोत्तम कार्य और प्रयास करें* (यूहन्ना 12:3)।

ग. यीशु के लिए अत्यंत बहुमूल्य इत्र को बड़ी मात्रा में अर्पण कर देने के द्वारा, मरियम यीशु की सेवा के लिए अपने आप से परे समर्पण के एक नये स्तर पर पहुंचाई गई। *शिष्या अपने आप को दान कर देती हैं। हम स्वयं एक बहुमूल्य इत्र है कि प्रेम, भक्ति और सेवा सहित यीशु के लिए उंड़ेल दिए जाएं* (यूहन्ना 12:3)।

घ. यीशु पर इत्र उंड़ेल देने के लिए मरियम ने पात्र को तोड़ा दिया। *मरियम के समान, शिष्या यीशु के लिए अपने जीवन को खोलकर अपने आप को उंड़ेल देती हैं* (मरकुस 14:3)।

5. मरियम अपने फलदायी जीवन के लिए जानी जाती थी।

क. जब मरियम के मित्र उससे मिलने आए थे तब उनकी भेंट यीशु से हुई। जब उन्होंने यीशु के आश्चर्यकर्म को देखा तब उन्होंने यीशु पर विश्वास किया। शिष्या आत्माओं को जीतनेवाली होती है। (यूहन्ना 11:45)।

ख. जब मरियम ने यीशु पर इत्र उंड़ेला तब सारा घर सुगंध से भर गया था (यूहन्ना 12:3)। *शिष्या का जीवन परमेश्वर के पवित्र आत्मा के मीठे फल को प्रगट करता है - प्रेम, आनंद, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम* (गलातियों 5:22-23)।

6. मरियम उस कार्य (प्रतिक्रिया) के कारण जानी जाती थी जो यीशु उसके लिए करता था।

क. जब मरियम की बहन मार्था ने उसकी आलोचना की तब यीशु ने मरियम का साथ दिया (लूका 10:42)।

ख. जब मरियम के भाई लाजरस की मृत्यु के बाद यीशु बैतनिय्याह

पहुंचा तब उसने मरियम को बुलवाया (यूहन्ना 11:28)।

ग. जब यीशु ने मरियम को रोते देखा तो वह सहानुभूतिशील हुआ। वह उसके साथ रोया (यूहन्ना 11:33,35)।

घ. जब मरियम और उसका परिवार लाजरस की मृत्यु से निराश थे तब यीशु ने उसे जीवित करके उन्हें शान्ति दी (यूहन्ना 11:38-44)।

ङ. जब मरियम की, यीशु पर बहुत ज्यादा मात्रा में बहुमूल्य इत्र उंड़ेल देने के लिए, आलोचना की गई तब यीशु ने उसका पक्ष लिया (यूहन्ना 12:7-8)।

च. जब मरियम और उसकी बहन मार्था ने यीशु के लिए अपना घर खोला तब उसने आनंद से उसका निमंत्रण स्वीकार किया (लूका 10:38-39)।

अ. यीशु हमारी भेंटों को अनुग्रह सहित स्वीकार करता है (यूहन्ना 12:2)।

आ. यीशु हमारी सेवा-रूपी भेंट को स्वीकार करता है, हमें अपनी उपस्थिति तथा आशीष देकर धन्यवाद प्रगट करता है (मरकुस 14:8; यूहन्ना 12:2)।

इ. यीशु अपने शिष्यों से संगति चाहता है (यूहन्ना 11:28)।

ई. यीशु अपने प्रेम रखनेवालों के साथ सहभागिता रखना चाहता है (लूका 10:38)।

7. मरियम, उसके जीवन में यीशु की विश्वासयोग्यता के द्वारा जानी जाती थी।

क. मरियम की भक्ति के कार्य को गलत समझा गया था, और कठोरता से उसकी आलोचना की गई थी। जो कुछ हो रहा था उसकी ओर यीशु ने ध्यान दिया और उसका बचाव किया (मरकुस 14:4-9)।

ख. यीशु का वह कहना कि मरियम को स्मरण किया जाएगा, सच हुआ है। पवित्र आत्मा के द्वारा मत्ती तथा मरकुस दोनों ने मरियम की इस घटना को और उसके लिए यीशु के द्वारा की गई भविष्यवाणी को अपने सुसमाचारों में सम्मिलित किया है। सब लोग जो बाइबल पढ़ते हैं, जान लेते हैं कि मरियम ने क्या किया था और यीशु ने उसके कार्य का समर्थन कैसे किया था (मत्ती 26:13; मरकुस 14:9)। *संभव है कि हमें यीशु के द्वारा मिलनेवाला छुटकारा या हमारे कामों*

के लिए मिलनेवाला पुरस्कार शीघ्र प्राप्त न हो। हो सकता है कि वह स्वर्ग में जाने पर ही मिले। परंतु यह निश्चित है कि वह अपने शिष्यों की सहायता करेगा और उनका आदर करेगा (मत्ती 19:29)।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. मेरे लिए यह क्यों आवश्यक है कि मैं एक अच्छी शिष्या बनने के लिए अपने पापों से पश्चाताप करूं और यीशु के साथ अपना व्यक्तिगत संबंध स्थापित करूं? वे कौनसी बातें हैं जो मैं यीशु के विषय में मात्र उसके साथ प्रतिदिन व्यक्तिगत रिश्ते में चलते हुए ही सीख सकती हूं?

2 बैतनिय्याह की मरियम अपने विश्वास को अपने प्रतिदिन के जीवन में जीती थी। क्या मेरे जीवन में कुछ ऐसी परिस्थितियां है जिन्हें मैं पूरी रीति से यीशु के हाथों में सौंपते हुए सुधार सकती हूं, उन पर से मेरा अपना नियंत्रण छोड़ते हुए?

3. मैं वे कौनसे विशिष्ट कार्य कर सकती हूं जो मेरे आस-पास के लोगों पर यह प्रगट करने में सहायक होंगे कि मैं यीशु की शिष्या हूं?

प्रार्थना:

हे पिता, मेरा प्रिय प्रभु यीशु यहां शरीर में उपस्थित नहीं है कि मैं उसे मरियम के समान वह उपहार दूं जिसकी सुगंध और स्पर्श हम सब को महसूस हो। मुझे सिखा कि मैं और बेहतर तरीके से नम्रता को प्रदर्शित करूं और मेरे जीवन की फलदायकता दिखा सके कि मैं उसकी शिष्या हूं। मुझे बता कि मैं कैसे वह जीवन जीऊं जिससे मेरे आसपास के लोग मुझ में उसकी उपस्थिति का प्रतिबिम्ब देख सकेंगे।

टिप्पणियां

4 शिष्या की जीवनशैली

मुख्य पद: यूहन्ना 15:5

"मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो . ."

प्रस्तावना

1. प्रत्येक पेड़ अपने फलों से जाना जाता है। यदि यीशु मसीह की शिष्या सच्ची दाखलता की डाली होती है तो यह हमारी जीवनशैली में दिखाई देना चाहिए।
2. हम सदा आकर्षित किए जाते हैं कि संसार की विचारधाराओं एवं मूल्यों को अपनाएं। महिलाएं भी उन्हीं के समान दिखाई देने के प्रयास में उन्हीं के समान पहिनावा, बालों का स्टाइल, जूतियों, और गहनों को अपनाती हैं। हम उनके समान बोलने और हावभाव करने के लिए भी लुभाए जा सकते हैं। परमेश्वर हम से अपेक्षा करता है कि हम, जो मसीह की शिष्याएं हैं, उसको प्रसन्न करनेवाली जीवनशैली को अपनाएं।
3. यह एक अच्छा अभ्यास है कि हम नियमित रीति से समय निकालें कि स्वयं से वे प्रश्न करें जिनसे यह प्रगट होता है कि हमारी मसीही चाल, हमारी जीवनशैली, परमेश्वर को प्रसन्न करनेवाली हैं या नहीं।

मसीही शिष्या की जीवनशैली को चार शीर्षकों के अंतर्गत समझा जा सकता है:

I. शिष्या और उसका उद्धार

1. बाइबल कहती है, *"डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ। क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है"* (फिलिप्पियों 2:12-13)। **इसलिए,**

क. **मात्र परमेश्वर में विश्वास कीजिए।** हमें अपने उद्धार के लिए मात्र परमेश्वर में विश्वास करना चाहिए। हम उद्धार पाने के लिए चंगाई, बपतिस्मा, मानवीय कार्य या मानवीय प्रयासों में विश्वास न रखें (प्रेरितों 4:12; इफिसियों 2:8-9)।

ख. **मसीह यीशु को अपने जीवन का प्रभु बनाइए।** मसीह सचमुच हमारे जीवन का प्रभु होना चाहिए। हमारी इच्छा पूर्णत: परमेश्वर को समर्पित की जानी चाहिए (लूका 9:23; 14:26)।

2. हमारा उद्धार प्रतिदिन के स्तर पर हमारे जीने के ढंग में दिखाई देना चाहिए। इसलिए,

क. **अपने समय को बुद्धिमानी से उपयोग में लाइए।** मसीह के प्रति हमारा जो समर्पण है वह हमारे समय का उपयोग करने के और अपनी प्राथमिकताओं को तय करने के ढंग में दिखाई देना चाहिए (इफिसियों 5:15-16)। हमें सांसारिक सुख के पीछे नहीं भागना चाहिए; उसके बदले हम अपने समय का उपयोग परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने में करें (मत्ती 6:33)।

ख. **पवित्र बनिए।** परमेश्वर ने हमारे लिए जो आदर्श ठहराया है वह पवित्र बनने का है (1 पतरस 1:15-17)।

- हमें पवित्र आत्मा से इतना भर जाना चाहिए कि वह हम में से प्रवाहित होकर दूसरों के जीवन को स्पर्श करे (प्रेरितों 13:52)।
- हमें प्रतिदिन पवित्र आत्मा से भरना और उसके द्वारा नियंत्रित रहना है (इफिसियों 5:18)।
- हमें अपने सब व्यवहार में, जो कुछ हम करते हैं उसमें, पवित्र होना है (1 पतरस 1:13)।
- हमें पवित्र आत्मा के द्वारा चलाए चलना है ताकि हम शरीर की लालसाओं को पूरा न करें (गलातियों 5:16-26)।

ग. **मसीह यीशु के जैसा स्वभाव धारण कीजिए।** हमारा स्वभाव वैसा ही होना चाहिए जैसा मसीह यीशु का था (फिलिप्पियों 2:5)।

- हमें उसे पवित्र विचारों के द्वारा प्रसन्न करना चाहिए (फिलिप्पियों 4:8-9)।
- हमें पाप से घृणा करनी चाहिए (भजन संहिता 119:104)।
- हमें शुद्ध विवेक के साथ जीना चाहिए। यह जानते हुए कि

हमने जानबूझकर परमेश्वर तथा मनुष्यों के प्रति बुराई नहीं की है (प्रेरितों 24:16)।

- कठिनाइयों के समय में भी हमें धीरज और आनंद बनाए रखना चाहिए (याकूब 1:2-3,12)।

II. शिष्या और उसका प्रभु

1. परमेश्वर के साथ घनिष्ट संबंध बनाए रखने के लिए हमें प्रार्थना में समय बिताना अनिवार्य है। **इसलिए,**

   क. प्रार्थना की महिला बनिए। शिष्याओं के लिए आवश्यक है कि प्रतिदिन हृदय की गहराई से की गई प्रार्थना में परमेश्वर के साथ संगति करें (याकूब 5:16)।

   ख. निरंतर प्रार्थना कीजिए। हमारे हृदय को निरंतर परमेश्वर के संपर्क में बने रहना चाहिए (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)।

   ग. शुद्ध मन के साथ प्रार्थना कीजिए। अवश्य है कि हमारी प्रार्थना निष्कपट हो (मत्ती 6:5-7)।

   घ. उद्देश्यपूर्ण प्रार्थना कीजिए। हमें सब मनुष्यों के लिए, विशेषत: सब के उद्धार के लिए, प्रार्थना करनी चाहिए (1 तीमुथियुस 2:1-4)।

2. शिष्याओं के लिए अनिवार्य है कि परमेश्वर के वचन, बाइबल, में डूबा हुआ समय बिताते हुए परमेश्वर से संगति करें। **इसलिए,**

   क. परमेश्वर का वचन पढ़िए (प्रकाशितवाक्य 1:3)। परमेश्वर का वचन हमारे जीवित रहने के लिए भोजन है (लूका 4:4)।

   ख. परमेश्वर के वचन का अध्ययन कीजिए (2 तीमुथियुस 2:15)। यह हमें इस योग्य भी बनाएगा कि हम दूसरों को परमेश्वर का वचन सिखाएं (2 तीमुथियुस 2:2)।

   ग. परमेश्वर के वचन पर मनन कीजिए (भजन संहिता 1:2)। परमेश्वर हमारा विश्वास तब बढ़ाता है जब हम वचन में समय बिताते हैं, उसे पढ़ते हैं और उस पर मनन करते हैं (रोमियों 10:17)।

   घ. परमेश्वर के वचन को रट लीजिए/ याद कर लीजिए (भजन संहिता 119:11)। परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में रखना हमें पाप से बचाता है।

ङ. **अपनी बातों में परमेश्वर के वचन का हवाला दीजिए** (मत्ती 4:1-11)। हमें मसीह यीशु के उदाहरण के अनुसार परमेश्वर के वचन का हवाला देना चाहिए, (उसने कहा था, "लिखा है")। विशेषकर तब जब हम परीक्षा और दु:ख में होते हैं, ताकि निश्चयपूर्वक इस बात की घोषणा करें कि हम वचन की सामर्थ और उसके अधिकार पर विश्वास करते हैं।

च. **परमेश्वर के वचन का पालन कीजिए** (याकूब 1:22)। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, और अपने लेखक के समान ही, सिद्ध और लाभदायक है कि उन सब को जो उस पर विश्वास करते और उसका पालन करते हैं उन्हें सिद्ध बनाए (2 तीमुथियुस 3:26)।

III. शिष्या और अन्य लोग

1. शिष्या के लिए अनिवार्य है कि सब लोगों पर परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करे (मरकुस 12:29-31)। **इसलिए,**

   क. **अपने साथी विश्वासियों के प्रति प्रेम प्रदर्शित कीजिए।** जैसे मसीह ने आप से प्रेम किया है वैसे ही दूसरों से प्रेम कीजिए। इसी के द्वारा अन्य लोग जानेंगे कि आप सच्ची शिष्या है (यूहन्ना 13:34-35)।

   ख. **अपने पड़ोसियों पर प्रेम प्रदर्शित कीजिए।** जब आप अपने पड़ोसियों के प्रति दयालु होंगी तब वे इस बात को और समझते जाएंगे कि आप इस संसार में औरों से भिन्न हैं (रोमियों 15:2)।

   ग. **अजनबियों के प्रति प्रेम प्रदर्शित कीजिए।** मसीहियों को अजनबियों से भी प्रेम करना चाहिए, क्योंकि हम उस प्रेम में से बांटते हैं जो हमारे हृदय में इस कारण उमड़ता है क्योंकि हम अब मसीह के द्वारा स्वीकार किए गए हैं (व्यवस्थाविवरण 10:19)।

   घ. **अपने शत्रुओं पर भी परमेश्वर का प्रेम प्रगट कीजिए।** मसीहियों के लिए अनिवार्य है कि जो उन्हें सताते हैं उनसे प्रेम करें और उन्हें क्षमा करें (लूका 6:27-31; मत्ती 5:44; रोमियों 12:19-21)।

2. शिष्याओं के लिए आवश्यक है कि अन्य विश्वासियों के साथ संगति करें (इब्रानियों 10:25)। **इसलिए,**

क. **सतत कलीसिया की आराधना में उपस्थित रहिए।** बाइबल हमें बताती है कि अन्य विश्वासियों के साथ मिलना ना छोड़े (इब्रानियों 10:24-25)।

ख. **अपने सलाहकार-समूह में उपस्थित रहने में विश्वासयोग्य रहिए।** विन का एक उद्देश्य दूसरी महिलाओं के साथ मिलकर एक-दूसरे की आत्मिक उन्नति के लिए संबंध स्थापित करना है (तीतुस 2:3-5)।

ग. **अतिथि-सेवा (पहुनाई) करने में लगे रहिए।** अन्य मसीहियों को अपने घर संगति के लिए आमंत्रित कीजिए (1 पतरस 4:8-9)।

3. शिष्याओं को आपसी संबंध में मसीह समान स्वभाव का प्रदर्शन करना है। **इसलिए,**

क. **ऐसी व्यक्ति बनिए जिसके साथ रहना आसान है।** हमें आनंदित और प्रसन्न महिलाएं बनना चाहिए (फिलिप्पियों 4:4-5)। इससे हमारे परिवारों में शान्ति और संतुष्टि आएगी क्योंकि हमारे परिवारजनों को हमारे साथ रहना आसान लगेगा (इफिसियों 4:31-32)।

ख. **क्षमा करनेवाला मन रखिए।** हमें उन्हें उदारता से क्षमा करना है जो हमारे विरुद्ध कोई अनुचित काम करते हैं (लूका 17:3-4; मत्ती 6:14-15)।

ग. **किसी भी बात के प्रति कड़वाहट रखने से बचे रहिए।** अपने प्रति किसी के द्वारा की गई बुराई को मन में रखे रहना कड़वाहट पालना होता है (याकूब 3:14-18; इब्रानियों 12:15)।

घ. **सेवक जैसी मनोवृत्ति रखिए।** हमें मसीह के सामन नम्र सेवक होना है (मत्ती 20:26-28; फिलिप्पियों 2:5-8); दूसरों की सेवा करने के द्वारा हमें यीशु का प्रेम प्रगट करना है।

IV. शिष्या और शिष्य-बनाना

1. आवश्यक है कि शिष्याएं सतत दूसरों को सुसमाचार सुनाएं और उन्हें उद्धार पाने का सुअवसर प्रदान करें। **इसलिए,**

क. **ऐसी मसीही बनिए जो अपनी गवाही देती है।** अपने उद्धार की गवाही दूसरों को सुनाना और उसे अपने पवित्र जीवन के द्वारा प्रमाणित करना आवश्यक है (मत्ती 5:16)।

ख. **अपने विश्वास के विषय में बताने के लिए अवसर की खोज में रहिए।** आप जहां भी रहती हो और जो कुछ भी करती हो, सदा अवसर की खोज में रहिए कि औरों को अपने विश्वास के विषय में बता सकें (प्रेरितों 1:8)।

2. शिष्याओं को निरंतर अपने आपका पुनरुत्पादन करते रहना है, दूसरों को शिष्य बनाना है। **इसलिए,**

   क. **शिष्य-बनानेवाली के रूप में आपका व्यक्तित्व मनोहर हो।** हमारा जीवन ऐसा हो कि अन्य लोग उसे देखकर हमारे नमूने पर चलना चाहेंगे (1 कुरिंथियों 11:1)।

   ख. **शिष्य बनाने के लिए मसीह के द्वारा दी गई आज्ञा का पालन कीजिए।** हमारी सर्वोच्च बुलाहट महान आदेश को पूर्ण करने के लिए है (मत्ती 28:18-20)।

3. एक अच्छे शिष्य-बनानेवाली होने के लिए आवश्यक है कि हम भी ऐसी हों जिन्हें सिखाया जा सके, जो निर्देश तथा सुधार के लिए डांट ग्रहण करनेवाली हों (नीतिवचन 18:15)। **इसलिए,**

   क. **सीखने का मन रखिए।** डांट और शिक्षा के द्वारा मसीह की देह सुदृढ़ होती है, और ईश्वरीय ताड़ना कृपा का ही एक रूप होती है जिसे स्वीकार किया जाना चाहिए (भजन संहिता 141:5)।

   ख. **दूसरों को सुधारते समय विनम्रता अपनाइए।** सुधार के लिए दी जानेवाली डांट कठोर न हो, परंतु सौम्य तथा आत्मिक उन्नति करनेवाली हो (गलातियों 6:1)।

   ग. **सुधार के लिए डांट स्वीकार करने में नम्र रहिए।** यदि सुधार के लिए दी गई डांट से क्रोध आता है तो शिष्या को अपने हृदय को जांचना चाहिए कि उसमें घमंड का पाप तो नहीं है (नीतिवचन 8:13)।

4. अच्छी शिष्याएं प्रेम के बंधन में एक-दूसरी से जुड़ी रहती हैं ताकि गहरे मसीही जीवन में निरंतर वृद्धि और विकास करते जाएं। **इसलिए,**

   क. **वृद्धि करते जाइए।** मसीहियों को आह्वान किया गया है कि जिसमें मात्र दूध ही पिया जाता है ऐसे बालकपन को छोड़कर परिपक्वता की ओर बढ़ें (इब्रानियों 5:12-14)।

ख. **वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए अपनी आदतों को अनुशासित कीजिए।** यह वृद्धि तब होती है जब शिष्या अपने आप को अध्ययन करने, शिक्षा देने तथा संगति करने के लिए समर्पित करती है (प्रेरितों 2:42)।

ग. **अपने सलाह देनेवाले समूह में सक्रिय बने रहिए।** प्रत्येक शिष्या की उचित वृद्धि के लिए नियमित सलाह आवश्यक होती है (1 पतरस 5:1-5)। प्रार्थना, बाइबल अध्ययन, सेवा, बाहर जाकर सुसमाचार-प्रचार या मिशन का कार्य करने के लिए छोटे समूह का सदस्य होना प्रत्येक मसीही के लिए सहायक होगा कि इन कामों को जिम्मेवारी के साथ करें।

घ. **अपने जीवन को निरंतर की शिष्यता के लिए वचनबद्ध कीजिए।** यीशु ने प्रार्थना की थी कि कलीसिया उसके तथा पिता के साथ एक होगी। हम एक होते हैं जब हम समर्पित शिष्यता के द्वारा मसीह में परिपक्वता पाने की दिशा में वृद्धि करने के लिए एकसाथ मिलकर परिश्रम करते हैं (यूहन्ना 17:21)।

उपसंहार

बाइबल हमें बताती है कि मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परंतु परमेश्वर हृदय को देखता है (1 शमूएल 16:7)। वह देखता है कि हम वास्तविकता में क्या है। परमेश्वर की दृष्टि में यह महत्वपूर्ण नहीं है कि हम ऊंचे हैं या नाटे, काले हैं या गोरे, सुंदर हैं या साधारण। उसकी दृष्टि में यदि कुछ महत्वपूर्ण है तो वह हमारे हृदय की दशा है। यह दशा हम पर भी प्रगट की जाती है जब हम प्रार्थनापूर्वक अपने हृदय को जांचते हैं और परमेश्वर से विनती करते हैं कि वह हम पर प्रगट करे कि उसकी दृष्टि में हम कैसे दिखाई देते हैं, और हम उसे प्रसन्न कर रहे हैं या नहीं।

प्रार्थना

प्रभु परमेश्वर, मैं तुझ से विनती करती हूं कि जब मैं प्रार्थनापूर्वक इस बात पर विचार करती हूं कि मैं तेरे वचन और पवित्र आत्मा की आज्ञाओं का पालन करती हूं कि नहीं तब मुझे वे क्षेत्र दिखा जिनमें मुझे वृद्धि करने की आवश्यकता है। मुझे मेरे पाप दिखा और जब मैं पश्चाताप करूं तब मेरी पुकार सुन और मुझे सब अधर्म से शुद्ध कर। आमीन।।

आत्मिक जांच सूची

कोई एकांत स्थान खोजिए, और अपने बाइबल में निम्नलिखित हवाले पढ़ते हुए उनके साथ दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। '☐ हां' और '☐ ना' में किए जानेवाले चिन्ह आपके उत्तर को दर्शाएंगे।

☐ हां ☐ ना 1. क्या मैं उद्धार के लिए केवल मसीह यीशु में भरोसा रखती हूं? (यूहन्ना 3:16; इफिसियों 2:8-9)

☐ हां ☐ ना 2. क्या मसीह यीशु मेरा प्रभु है? (लूका 9:23; लूका 14:26)

☐ हां ☐ ना 3. क्या मेरे जीवन की प्राथमिकताएं परमेश्वर को प्रसन्न करती हैं? (मत्ती 6:33)

☐ हां ☐ ना 4. क्या मैं प्रतिदिन पवित्र आत्मा से नियंत्रित और उसके द्वारा चलाए चलती हूं? (गलातियों 5:16-26; इफिसियों 5:18)

☐ हां ☐ ना 5. क्या परमेश्वर मेरे विचारों से प्रसन्न होता है? (फिलिप्पियों 4:8-9)

☐ हां ☐ ना 6. क्या मैं वास्तव में पाप से घृणा करती हूं? (भजन संहिता 119:104)

☐ हां ☐ ना 7. क्या मेरा विवेक शुद्ध है? (प्रेरितों 24:16)

☐ हां ☐ ना 8. क्या मैं कठिनाइयों का सामना धीरज और आनंद के साथ करती हूं? (याकूब 1:12)

☐ हां ☐ ना 9. क्या मेरे प्रार्थना के जीवन से परमेश्वर प्रसन्न है? (फिलिप्पियों 4:6; 1 तीमुथियुस 2:1-4)

☐ हां ☐ ना 10. क्या मैं परमेश्वर के वचन का अध्ययन करती हूं और उसे रट लेती हूं तथा उसका पालन करती हूं? (2 तीमुथियुस 2:2; 2:15; 3:16)

☐ हां ☐ ना 11. क्या मैं परमेश्वर से प्रेम करती हूं, और अपने पड़ोसी से वैसा ही प्रेम जैसा मसीह ने मुझ से किया है? (लूका 10:27; यूहन्ना 13:34)

☐ हां ☐ ना 12. क्या मैं मसीही विश्वासियों के समूह के साथ नियमित सहभागिता रखती हूं? (इब्रानियों 10:25)

☐ हां ☐ ना 13. क्या मैं एक मिलनसार व्यक्ति हूं जिसके साथ जीना आसान है? (इफिसियों 4:31-32)

☐ हां ☐ ना 14. क्या मेरा मन क्षमा करनेवाला है; सेंतमेंत क्षमा देनेवाला, क्षमा स्वीकार करनेवाला है? (मत्ती 6:14-15)

☐ हां ☐ ना 15. क्या मैं किसी बात के प्रति कड़वाहट से भरी हुई हूं? (इब्रानियों 12:15)

☐ हां ☐ ना 16. क्या मेरा स्वभाव एक दास जैसा है? (मत्ती 20:28)

☐ हां ☐ ना 17. क्या मैं मसीह यीशु की गवाही देती हूं, सुसमाचार सुनाती हूं? (प्रेरितों 1:8)

☐ हां ☐ ना 18. क्या मैं शिष्य बना रही हूं? (मत्ती 28:18-20)

☐ हां ☐ ना 19. क्या मैं सीखने का मन रखती हूं? (नीतिवचन 18:15)

☐ हां ☐ ना 20. क्या मुझे नियमित रूप से किसी के द्वारा शिष्यता की शिक्षा या सलाह दी जा ही है? (1 पतरस 5:1-5)

इस सूची का लाभ तब ही होगा जब आप इन प्रश्नों का उत्तर, परमेश्वर के वचन के प्रकाश में, पूर्णत: इमानदारी से देंगे। जैसे-जैसे ये बाइबल वचन तथा प्रश्न आपको अपने समर्पण में कमी के क्षेत्र, जिनमें आप कमजोर हैं, या किसी पाप का अस्तित्व दर्शाते हैं, एक पेपर पर उन बातों को लिखिए जिनमें आपको सुधार करने की आवश्यकता है और दूसरे पर वे पाप लिखिए जिनके लिए क्षमा की आवश्यकता है। प्रार्थना में कुछ समय देने के पश्चात्, अपने पापों का अंगीकार कीजिए, उनके लिए पश्चात्ताप कीजिए, अपना जीवन मसीह यीशु को पुन: समर्पित कीजिए! उसी पेपर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पद 1 यूहन्ना 1:9 लिखिए, तब निश्चयपूर्वक कहिए कि आपको उन पापों के लिए परमेश्वर की ओर से क्षमा और उन पर विजय प्राप्त हो गई है। तब परमेश्वर से उन पापों के लिए क्षमा प्राप्त हो गई है इस संकेत के रूप में उस पेपर को फाड़ दीजिए। जिन क्षेत्रों में अधिक समर्पण की आवश्यकता है उनके लिए क्या करें इसका मार्गदर्शन पाने हेतु परमेश्वर से बुद्धि मांगिए (याकूब 1:5)। तब उस हर एक अवसर का लाभ उठाइए जो आपको अपने आसपास के लोगों तक पहुंचने के लिए मिलता है ताकि उन्हें सुसमाचार सुनाएं और शष्य बनाएं।

टिप्पणियां

5 मसीह में
पवित्र जीवन के लिए एक प्रेरणादायी उदाहरण

मुख्य पद: 2 कुरिंथियों 5:17
"इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई हैं।"

बाइबल वचन: कुलुस्सियों 2:9-12; रोमियों 8:1-11

आवश्यक सामग्री: काँच का 1 बड़ा बरतन, 1 छोटा प्याला, कुछ पत्थर (छोटे और बड़े जो ग्लास में जा सकेंगे), चुटकी भर बालू और धूल।

प्रयोग की तैयारी: बड़े बरतन को पर्याप्त पानी से भर दीजिए कि उसमें छोटा प्याला पूरा डूब सके।

भर जाने की आवश्यकता; मसीह से बाहर रहकर पवित्र जीवन जीने का प्रयास करने की व्यर्थता इफिसियों 5:18

1. मैंने पवित्र आत्मा के द्वारा परिपूर्ण होने के विषय में सुना और पढ़ा था और उसकी लालसा की थी। मैं अपना प्रातःकालीन मनन करती **(प्याले को पानी में डुबाइए कि पूरा भर जाए)**, परन्तु दोपहर होते-होते मुझे आत्मा से "आधा भरा" ही महसूस होता **(प्याले को हिलाइए ताकि पानी बाहर गिरे)।** जैसे-जैसे परेशानियां या परीक्षाएं आतीं, मैं और, फिर और खाली होती जाती **(पानी प्याले से बाहर छलकाते रहिए)।**

2. मैं ने इफिसियों 1 में पढ़ा था जहां *मसीह में* होने के के बारे बताया गया है। **(प्याले को बड़े बरतन के अंदर, पानी में रखिए।)** अब पानी प्याले को भर देता है और प्याला पानी के अंदर है। **(किसी से**

मसीह में: परिपूर्णता, सुरक्षा, मसीह के जीवन के गुण। गलातियों 2:20

कहिए कि आकर पानी को स्पर्श किए बिना प्याले को स्पर्श करे।) जब हम मसीह में होते हैं, तब शैतान हम तक नहीं पहुंच सकता। **(उस व्यक्ति से कहिए कि प्याले को पानी में अंदर रखते हुए ही उठाकर उल्टा करे।)** क्या वह खाली हो जाता है? **(उससे कहिए कि प्याले को हिलाए।)** पहले, जब प्याला पानी के बाहर था और हम ने उसे हिलाया था, वह खाली हो गया था, परन्तु अब वह पूरा भरा ही रहता है!!

3. **(प्याले को पानी से बाहर निकालते हुए उसमें बड़े पत्थर डालिए। यह जीवन-परिवर्तन के पहले के दृश्य पापों को दिखाने के लिए हैं। रोमियों 5:5-8)** पूछिए: क्या प्याला पूरा भरा है? हां, क्योंकि पानी मुंह तक है। या फिर नहीं, क्योंकि पत्थरों ने पानी की जगह ली है? कुछ लोग ऐसा जीवन जीते हैं जहां पाप (पत्थर) उन्हें आत्मा से परिपूर्ण होने से रोकते हैं। **(प्याले में कुछ छोटे पत्थर डालिए।)** कुछ पाप छोटे होते हैं, छिपे हुए, दूसरों को मालूम न होनेवाले, न दिखाई देनेवाले पाप (1 यूहन्ना 1:8,10; लूका 11:24-26)।

पाप पवित्र आत्मा का स्थान लेता है; प्याला मुंह तक भरा है परंतु मात्र पानी से भरा नहीं है। इब्रानियों 12:1

(प्याले में कुछ सुंदर, कांच के कंचे डालिए।) कुछ पाप "सुंदर पाप" होते हैं; ऐसी आदतें जिनसे मुझे आनंद मिलता है और जिन्हें मैं छोड़ना नहीं चाहती (1 कुरिंथियों 9:12)।

कुछ पाप "रोकने वाले पाप" होते हैं। ये कुछ अच्छी वस्तुएं भी हो सकती हैं, जैसे कि पैसा, समय, या मनोरंजन। परंतु यदि हम उनसे हद से अधिक प्रेम करते हैं और उनका अनुचित उपयोग करते हैं तो वे हमें धीमा करते हैं (इब्रानियों 12:1-2)। आप के हृदय में वह कौन-सी बात है जो पवित्र आत्मा का

स्थान ले लेती है? आप किस से भरे हुए हैं, पाप (पत्थर) से या मसीह से? पानी प्याले के मुंह तक हो सकता है, परन्तु संभावना है कि प्याला पत्थरों के कारण आधा ही भरा होगा।

4. **(पत्थरों को निकालिए और प्याले को पुनः पानी से भरिए। पानी में चुटकी भर धूल डालिए। किसी से उसे पीने कहिए।)** धूल या पाप थोड़ा-सा होने पर भी पूरे पानी को गंदा कर देता है। परमेश्वर हमसे कहता है कि हम सिद्ध बनें जैसा हमारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है (मत्ती 5:48)।

याकूब 2:10
1 यूहन्ना 1:9

5. **(प्याले को पानी के भीतर रखिए और कुछ पानी को उससे बाहर गिराने का प्रयास कीजिए।)** जब मैं प्याले को पानी में रखता हूं और कुछ उंडेलता हूं, बाहर क्या निकलता है? निश्चय ही पानी। जब कोई आपको क्रोध दिलाता है, आपके मुख से क्या निकलता है, शाप या आशीषें? मसीह यीशु के मुख से आशीष ही निकलती है। "पिता इन्हें क्षमा कर।" क्या मेरी नाराज पत्नी, मांग करनेवाले बच्चे, लड़ाकू दुकानदार, लापरवाह ड्राइवर के प्रति मेरा हमेशा यही प्रत्युत्तर होता है? यदि बाहर कड़वाहट निकलती है तो मेरे भीतर सिरका है, शहद नहीं। यदि मैं मसीह से भरा हुआ हूं तो मात्र मसीह ही बाहर निकलेगा, मीठे शहद के समान!

जो अंदर होता है वही बाहर आता है।
याकूब 3:9-12

6. **(पानी से भरे प्याले को किसी के निकट ले जाइए और उसे प्याले पर हलके से मारने कहिए। ध्यान दीजिए कि कुछ पानी उस व्यक्ति पर भी छलक जाए।)**

रिश्तों के संपर्क की सभी दशाओं में, अनिवार्य है कि आप जिसके संपर्क में आते हैं वह आपके जीवन में उपस्थित पवित्र आत्मा द्वारा प्रभावित हो। उन्हें अनुभव

जब हमें धक्का दिया जाता है. औरों को आशीष मिलेगी
उत्पत्ति 12:1-3
कुलुस्सियों 1:27
रोमियों 12:1-2

होना चाहिए कि आपके निकट होने के कारण वे आशीषित हुए हैं, जबकि वे आपका क्रोध भड़का रहे थे। आप औरों पर क्या छलकाते हैं?

कल्पना कीजिए कि आपका जीवन एक बोतल है; उसे परमेश्वर के आत्मा के महासागर में फेंक दीजिए और होने दीजिए कि वह उसे गले लगाए और पानी से भर दे। अपना जीवन मसीह को समर्पित कर दीजिए। होने दीजिए कि वह आपको भर दे, आपको चारों ओर से घेर दे, आपको गले लगाए और आप में निवास करे। (यूहन्ना 17:1-26)।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. वे "छोटे, सुंदर पाप" कौनसे हैं जो आपको लुभाते हैं?
2. जब कोई आपसे टकराता है तब आपसे क्या "बाहर छलकता" है?

प्रार्थना

आपके अपने शब्दों में अपने पापों को स्वीकार कीजिए, मसीह से प्रार्थना कीजिए कि आपकी सहायत करे कि आपके जीवन में कौनसे पत्थर तथा गंदगी के कण हैं यह आप जान सकें। उन्हें बाहर निकालने में उसकी सहायता मांगिए, और उसकी परिपूर्णता के प्रति समर्पित हो जाइए। मसीह जो आप में है वह महिमा की आशा है (कुलुस्सियों 1:27)।

टिप्पणियां

6 शिष्या तथा उसके संबंध

मुख्य पद: रोमियों 12:18

"जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक
सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।"

प्रस्तावना

1. यह बात हमारे समझने के लिए भले ही कठिन हो, परंतु परमेश्वर त्रिएक परमेश्वर है–तीन व्यक्ति: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा! और इसके साथ ही वह एकमात्र परमेश्वर भी है (व्यवस्थाविवरण 6:4)।
2. त्रिएकता के तीनों व्यक्ति आपस में सतत उचित, स्वस्थ संबंध में बने रहते हैं। उसी प्रकार, मसीह के शिष्यों को भी एक–दूसरे के साथ उचित स्वस्थ संबंध में बने रहना है।

चार महत्वपूर्ण संबंध जिन्हें विकसित करना शिष्या के लिए अनिवार्य है:

1. **शिष्या के लिए (यदि वह विवाहिता है तो) अपने पति के साथ के संबंध को महत्व देना और उसे विकसित करना अनिवार्य है।**
   - क. स्मरण रखिए कि शिष्या का विवाह, शिष्या के जीवन की अन्य बातों के समान ही, परमेश्वर की महिमा और आदर करने के लिए है (1 कुरिंथियों 10:31)।
   - ख. बाइबल निर्देश देती है कि पत्नियों को अपने–अपने पति के आधीन रहना है, जैसे प्रभु के। यह अधीनता पति के प्रति प्रेमपूर्ण तथा आनंदमय आज्ञापालन है। परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार पति के अधिकार का आदर करना और उसके प्रति समर्पित रहना है (इफिसियों 5:22,25)।

थेल्मा ब्राउन की पुस्तक

राजकुमारी

से उद्धरण

- वह पति और वह पत्नी, जो जीवन में सब से अधिक प्रेम, एक दूसरे से भी अधिक, उससे (परमेश्वर से) करते हैं, और जो एक साथ उसके वचन का अध्ययन और प्रार्थना करते हैं, उनके पास उसकी महान सामर्थ होती है कि शत्रु (शैतान) के किसी भी हमले का सामना कर सकें।
- यदि आपके सामान्य स्वभाव में आनंदित मनोवृत्ति दिखाई देती है, तो आपका घर आनंद से भरा हुआ स्थान होगा।
- अपने पति की प्रशंसा करने की आदत डालिए। कटाक्ष या ताना मारना वैवाहिक बोलचाल में कैंसर जैसा होता है।
- कभी भी एक दूसरे को नीचा दिखाने की आदत में मत जाइए। एक दूसरे की उन्नति के लिए आप जो कुछ कर सकते हैं, वह कीजिए।
- अपने पति को संभालिए। उनसे प्रेम कीजिए। उन्हें परमेश्वर की घनिष्टता में ले जाइए, क्योंकि वे संपूर्णतया आपके तब ही होंगे जब वे संपूर्णतया परमेश्वर के होंगे!
- जब मसीह ने हमें एक दूसरे से प्रेम करने की आज्ञा दी तब क्या उसने उसमें "सास-ससुर को छोड़कर बाकी से" जोड़ा था?
- पारिवारिक जोड़ी, परमेश्वर के साथ और परमेश्वर के लिए जीवित रहते हुए, समय के साथ-साथ आपस में और अधिक गहरी और संतुष्ट होती जाती है। और इसकी कुंजी है परमेश्वर में बने रहना! उसके साथ, विवाह से अधिक सुदृढ़ बंधन और कोई नहीं है; उसके बिना, इससे कमजोर कोई नहीं है। किसी भी दंपति के लिए सर्वोच्च सलाह एक ही होगी, "परमेश्वर के निकट बने रहिए।"

ग. शिष्या का व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि उसका मसीह-समान चरित्र अविश्वासी पति पर भी बड़ा प्रभाव डाल सके। उसका पवित्र, नम्र, परमेश्वर का भय मानने वाला, प्रेमी तथा पवित्र आत्मा के फलों से सलोना व्यवहार उसके पति के विश्वास को उसके लिए ही नहीं परंतु प्रभु के लिए भी जीत सकता है। *"इसलिए कि यदि इनमें से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चालचलन को देखकर बिना वचन के अपनी-अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा खिंच जाएं"* (1 पतरस 3:1)।

घ. शिष्या अपने आत्म-सम्मान को उस सुंदर उद्देश्य में पा सकती है जो परमेश्वर ने पत्नी की भूमिका के लिए ठहराया है: *पति के लिए "एक सहायक"* (उत्पत्ति 2:18)। अच्छी पत्नी अपने पति से प्रेम करती है (तीतुस 2:4) और *"अपने जीवन के सारे दिनों में उससे बुरा नहीं, परंतु भला ही व्यवहार करती है"* (नीतिवचन 31:12)।

ङ मसीही विवाह शिष्यों के लिए एक सुअवसर है कि अपने-अपने जीवनसाथी के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह तथा प्रेम का अदान-प्रदान करें। पति और पत्नी, यदि दोनों विश्वासी हैं तो, *"जीवन के वरदान (अनुग्रह) के वारिस हैं"* (1 पतरस 3:7)। वे न मात्र सांसारिक अच्छी बातों में परंतु अनंतकालिक जीवन में भी सह-वारिस हैं। वे हर एक प्रकार की अनबन और असन्तोष को टालते हुए या उसे क्षमा के द्वारा सुलझाते हुए, अपने संबंध को इस आत्मिक तालमेल में बनाए रखते हैं। प्रार्थना के जीवन में बाधा न पड़ने के लिए यह आवश्यक होता है (मरकुस 11:25)।

च. अन्य महत्वपूर्ण बातों के साथ ही अनिवार्य है कि हम अपने जीवनसाथी के साथ समय व्यतीत करें। ऐसा समय जब हम गहरे, अर्थपूर्ण वार्तालाप में पूर्णत: व्यस्त हों। यह एकता का मजबूत बंधन परीक्षाओं से बचने का संरक्षण होता है (1 कुरिंथियों 7:3-5)।

छ. "परिवार-व्यवस्था का आरंभ स्वयं परमेश्वर ने किया था। यह उसकी कल्पना है, और यह उसे बहुत प्रिय है। इफिसियों 5:22-23 हमें बताता है कि वैवाहिक संबंध उस प्रेम का ज्वलंत उदाहरण है जो मसीह को कलीसिया से है। वह चाहता है कि यह संबंध एक पवित्र, सुंदर व्यवस्था और सम्पूर्ण संसार के समक्ष उसके उस प्रेम का चमकदार चित्रण हो जो उसे अपनी दुल्हन कलीसिया से है।"
- मम्मा थेल्मा ब्राउन

2. शिष्या को अपने बच्चों के साथ के संबंध को महत्व देना और उसे विकसित करना अनिवार्य है।

क. इफिसियों 6:4 में माता-पिता के लिए "मत करो" और "करो" का निर्देश दिया गया है: अपने बालकों को तंग मत करो। प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनका पालन-पोषण करो।

ख. माता-पिता अपने बच्चों को क्रोधित और उत्तेजित कर सकते हैं यदि वे बहुत ज्यादा आलोचनात्मक, बहुत ज्यादा सख्त, अनावश्यक रीति से चिड़चिड़े या किसी एक बच्चे का पक्ष लेने वाले या सब बच्चों के साथ समान व्यवहार न करनेवाले होते हैं (याकूब 1:2-8)।

ग. माता-पिता के लिए आवश्यक हैं कि वे अपने बच्चों के साथ के संबंधों में परमेश्वर के गुणों को प्रगट करें (जिस प्रकार अन्य किसी भी संबंध में करना है)। आवश्यक है कि हम कोमल और दयावान हो, जैसा हमारा स्वर्गीय पिता है (इफिसियों 4:32)।

घ. और जैसे पिता परमेश्वर हमें, अपनी शिष्याओं को, अनुशासित करता है, अनिवार्य है कि जब आवश्यकता हो तब हम अपने बच्चों को प्रेमपूर्वक दण्ड दें (इब्रानियों 12:6)।

ङ नीतिवचन 22:6 कहता है, "लड़के को शिक्षा उसी मार्ग की दे जिसमें उसको चलना चाहिए।" *"शिक्षा दे"* के लिए जो शब्द उपयोग में लाया गया है उसका अर्थ शिक्षा के साथ ताड़ना और दण्ड देना होता है।

च. हमारे लिए आवश्यक है कि जब हमारे बच्चे पाप करें तब हम उन्हें रोकें (मूल शब्द का अर्थ निर्देश देना, सुधारना और विरोध करना है।) 1 शमूएल 2:34-35 में हम पढ़ते हैं कि एली ने अपने पुत्रों को रोका नहीं, और परमेश्वर ने उन्हें उनके शत्रुओं के द्वारा नाश होने दिया।

छ. अन्य महत्वपूर्ण बातों के साथ ही अनिवार्य है कि हम अपने बच्चों के साथ समय बिताएं। ऐसा समय जब हम उनके साथ गहरे, अर्थपूर्ण बातचीत में पूर्णत: व्यस्त हों (लूका 1:17)।

3. शिष्या को अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ के संबंधों को महत्व देना और उसे विकसित करना अनिवार्य है।

क. शिष्या का अपने सास-ससुर के साथ का संबंध स्नेहपूर्ण तथा उनकी परवाह करनेवाला होता है। इसके लिए रूत एक आदर्श उदाहरण है। उसने अपनी सास से कठिन परिस्थितियों में भी प्रेम किया - तब भी जब उसे उससे स्वतंत्र होने का अवसर था। उसने अपना ही लाभ नहीं सोचा परंतु अपनी सास की भी चिंता की। वह ऐसा कर सकी क्योंकि वह जीवित परमेश्वर में विश्वास करती थी और उसका भय मानती थी (रूत 1:16-17; 2:14,18)।

ख. शिष्या अपने परिवार की, अपने नौकर-चाकरों की भी, अच्छी देखभाल करती है। वह, अपनी पारिवारिक जिम्मेवारियों को पूरा करने के लिए भोर को ही जाग जाती है और जब आवश्यकता होती है तब देर रात तक जागती है। वह कठिन परिश्रम करती है। वह अपने घराने के चालचलन के प्रति भी चिंतित रहती है (नीतिवचन 31:15-27)।

ग. शिष्या अपने नाते-रिश्तों में अपने व्यवहार को एक आदर्श के रूप में बनाए रखती है और अपने से छोटी महिलाओं को अच्छी बातें सिखानेवाली सलाहकार बनती है (तीतुस 2:3)। इसके लिए वह निंदा करने से बचती है। इसका अर्थ यह है कि वह अपनी जीभ पर नियंत्रण रखती है (याकूब 3:5-6,8)। वह सब के साथ के व्यवहार में आत्मसंयमी तथा सुशील होती है।

घ. शिष्या परमेश्वर के वचन से भले चरित्र का निर्माण करना सीखती है (1 पतरस 1:5-6)।

4. शिष्या को अपने परिवार से बाहर के लोगों के साथ के संबंध को महत्व देना और उसके प्रति सावधान रहना अनिवार्य है।

क. उसे अविश्वासियों के साथ बुद्धिमानी से व्यवहार करना चाहिए (कुलुस्सियों 4:5)। उनके बीच उसका चालचलन मर्यादित, शालीनता तथा ईमानदारी से पूर्ण हो ताकि उन्हें मसीहीयत को बदनाम करने का कोई कारण न मिले। यह उसे उन्हें सुसमाचार सुनाने का अवसर भी देगा।

ख. उसे पहुनाई करनेवाली होना चाहिए। उसमें यह आदत होनी चाहिए कि दूसरों की आवश्यकतों की पूर्ति करे-विशेषत: उनकी जो मसीह

के लिए परिश्रम करते और दु:ख उठाते हैं (रोमियों 12:13)।

ग. उसे गरीब और कंगालों के प्रति, विशेषकर उनके प्रति जो कलीसिया के सदस्य हैं, दानशील होना चाहिए (1 यूहन्ना 3:17; याकूब 2:15)।

घ. उसे परमेश्वर की कलीसिया में ठहराए गए अधिकार का आदर करना चाहिए। वचन के उन सेवकों की शिक्षाओं तथा चेतावनियों को मानना चाहिए जो उसकी आत्मिक भलाई के लिए परमेश्वर की सम्पूर्ण मनसा का प्रचार विश्वासयोग्यता से करते हैं (इब्रानियों 13:17)।

ङ यदि वह किसी नौकरी में है तो उसे अपने अधिकारियों का आदर करना और उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। परंतु, मात्र ऐसी ही आज्ञाओं का पालन जो मसीही विश्वास एवं चरित्र के विपरीत नहीं हैं। उसे अपनी जिम्मेवारियों को निभाने में विश्वासयोग्य होना चाहिए यह सोचकर कि वह मनुष्यों की नहीं परमेश्वर की सेवा करती है (इफिसियों 6:5-8)।

5. शिष्या को दूसरों के साथ वैसे ही मधुर संबंध बनाए रखने हैं जैसे परमेश्वर के वचन में निर्देश दिए गए हैं।

यहां नया नियम में मिलनेवाले कुछ "एक दूसरे से" दिए गए हैं जो हमें बताते हैं कि एक दूसरे के साथ कैसा संबंध रखें जिससे परमेश्वर प्रसन्न होगा। -

"एक दूसरे से" प्रेम करो

1) 1 यूहन्ना 4:7 - हम आपस में प्रेम रखें
2) 1 पतरस 4:8 - एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो
3) 1 पतरस 1:22 - तन मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो
4) 1 पतरस 3:8 - सब के सब एक मन और भाईचारे की प्रीति रखनेवाले
5) रोमियों 12:10क - एक दूसरे पर मया रखो
6) गलातियों 5:13 - प्रेम से एक दूसरे के दास बनो

"एक दूसरे" का आदर करो

7) यूहन्ना 13:14 - तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए
8) 1 पतरस 5:5 - एक दूसरे की सेवा के लिए दीनता से कमर बान्धे रहो

9) फिलिप्पियों 2:3 – एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो
10) इफिसियों 4:2 – प्रेम से एक दूसरे की सह लो
11) रोमियों 15:7 – एक दूसरे को ग्रहण करो
12) रोमियों 12:10 – आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो
13) इफिसियों 5:21 – एक दूसरे के आधीन रहो
14) फिलिप्पियों 2:4 – दूसरों के हित की भी चिंता करे
15) मरकुस 9:50 – आपस में मेल मिलाप से रहो

"एक दूसरे" को क्षमा करो

16) रोमियों 14:13 – एक दूसरे पर दोष न लगाएं
17) इफिसियों 4:32 – एक दूसरे के अपराध क्षमा करो
18) कुलुस्सियों 3:13 – एक दूसरे के अपराध क्षमा करो
19) रोमियों 12:14-16 – आशीष दो, आनंद करो, रोओ, एक-सा मन रखो

"एक दूसरे" को प्रोत्साहन दो

20) 1थेस्सलुनीकियों 5:11 – एक दूसरे को शान्ति दो
21) 1थेस्सलुनीकियों 5:11 – एक दूसर की उन्नति के कारण बनो
22) रोमियों 14:19 – उन बातों का प्रयत्न करें जिससे ... एक दूसरे का सुधार हो
23) गलातियों 6:2 – एक दूसरे के भार उठाओ
24) कुलुस्सियों 3:16 – एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ
25) इब्रानियों 10:24 – भले कामों में उस्काने के लिए एक दूसरे की चिन्ता करें
26) 1 पतरस 4:10 – जो वरदान मिला है ... उसे ... एक दूसरे की सेवा में लगाए
27) इब्रानियों 3:13 – एक दूसरे को समझाते रहो
28) फिलिप्पियों 1:4 – सब के लिए प्रार्थना करते रहो

"एक दूसरे" के साथ मत कीजिए:

29) याकूब 4:11 – एक दूसरे की बदनामी न करो
30) गलातियों 5:15 – एक दूसरे का सत्यानाश न कर दो
31) गलातियों 5:26 – न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें

32) याकूब 5:9 – एक दूसरे पर दोष न लगाओ
33) कुलुस्सियों 3:9 – एक दूसरे से झूठ मत बोलो
34) रोमियों 14:13 – अपने भाई के सामने ठेस या ठोकर खाने का कारण न रखो

चर्चा के लिए प्रश्न

1. मसीही महिला को अपने पति के साथ के संबंध को कैसे विकसित करना चाहिए?
2. परमेश्वर अपने गुणों में पिता के कौनसे गुणों को प्रगट करता है जो मसीही माता-पिता के अपने बच्चों के साथ के संबंधों के लिए आदर्श हैं?
3. मसीही महिला अपने सास-ससुर के प्रति प्रेम का प्रदर्शन कैसे कर सकती है?

प्रार्थना

प्रिय परमेश्वर, मुझे सबल बना, अपने अनुग्रह से, ताकि मैं औरों के साथ अच्छे और उचित संबंध बनाए रखूं, जैसा कि तेरे वचन में कहा गया है। मैं प्रत्येक रिश्ते को उसके मान के अनुसार महत्व दे सकूं और दूसरों के साथ के मेरे प्रत्येक व्यवहार के द्वारा तेरी महिमा कर सकूं। आमीन।।

टिप्पणियां

7 शिष्या तथा आत्मा-जीतना

मुख्य पद: नीतिवचन 11:30

"जो बुद्धिमान है वह आत्माओं को जीतता है।"

"विन" शिष्यता मैन्युअल का यह पाठ "आत्मा-जीतने के-सात कदम-सेमिनार" पुस्तिका से लिया गया है। उस पुस्तिका को थेल्मा ब्राउन ने लिखा था, जिन्हें भारत में उनके द्वारा प्रोत्साहित हुईं महिलाओं के मध्य स्नेहपूर्ण शब्दों में "मम्मा" कहा जाता था। उनके और उनके द्वारा दी गई प्रेरणा के विषय में अधिक जानकारी पाने के लिए "समर्पण" पृष्ठ देखिए।

वह पुस्तिका गवाही देने तथा आत्मा-जीतने की पद्धतियों को सिखाती है और उसके सात पाठों को "कदम" कहा गया है। उनमें से पांच कदम यहां लिए गए हैं। पहिला कदम आत्मा-जीतने के तर्कों पर जोर देता है और अगले चार सुसमाचार सुनाने की प्रभावकारी पद्धतियां प्रस्तुत करते हैं।

1 आत्मा-जीतने के तर्क

थोड़े ही हैं जो प्रचारक होने के लिए बुलाए गए हैं, परन्तु हर एक नया जन्म प्राप्त मसीही आत्मा-जीतनेवाला बनने के लिए बुलाया गया है। अवश्य है कि आत्मा-जीतने के आनन्द में आप अपने लोगों की अगुवाई करें।

"आत्मा-जीतने का कार्य,
एक निश्चित व्यक्ति की
एक निश्चित उद्धारकर्त्ता को ग्रहण करने के लिए
एक निश्चित समय पर अगुवाई करने का
एक निश्चित प्रयास है" - बिली सन्डे।

1. आत्मा-जीतनेवाली बनने के लिए तर्क

1. आत्मा का मूल्य - मरकुस 8:35-38
2. नरक की वास्तविकता - लूका 12:4-5
3. प्रत्येक पापी के लिए मसीह ने क्रूस पर सही यातनाएँ - 1पतरस 3:18
4. इस संसार का खोखलापन और मूर्खता - 1 पतरस 1:24-25
5. स्वर्ग में अपने परिवार के सारे सदस्य हों ऐसी इच्छा - 1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17
6. स्वर्ग की महिमा - यूहन्ना 14:2-3
7. विश्वासयोग्य आत्मा-जीतनेवालियों के लिए व्यक्तिगत पुरस्कार - दानिएल 12:3

2. व्यक्तिगत कार्यकर्ता के लिए आवश्यक बातें

1. अवश्य है कि वह स्वयं उद्धार पाई हुई हो और अपने उद्धार के प्रति सुनिश्चित हो - 2 पतरस 1:10-11
2. अवश्य है कि वह शुद्ध पवित्र जीवन व्यतीत करे - 2 पतरस 3:14
3. अवश्य है कि वह प्रेम की आत्मा में कार्य करे - 1 पतरस 1:22-23
4. अवश्य है कि उसे बाइबल का उपयुक्त ज्ञान तथा उसे उपयोग में लाने की जानकारी हो - 2 तीमुथियुस 2: 15
5. अवश्य है कि वह प्रार्थना करनेवाली महिला हो - इफिसियों 6:18
6. अवश्य है कि वह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो - इफिसियों 5:18
7. अवश्य है कि उसमें खोई हुई आत्माओं के लिए दया हो - यहूदा 23

चर्चा के लिए प्रश्न

ऊपर लिखी गई प्रत्येक आवश्यकता क्यों महत्त्वपूर्ण है?

2 गवाही कैसे दें

बहुत-से लोग गलती से यह विश्वास करते हैं कि गवाही देने के सुअवसर संयोगवश आते हैं। हमारा प्रभु नहीं चाहता कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन-फिराव का अवसर मिले (2 पतरस 3:9 ख)। परमेश्वर चाहता है कि प्रत्येक को सुसमाचार का सन्देश सुनने का सुअवसर मिले। यह ध्यान में रखते हुए, प्रत्येक विश्वासिनी को पहले से तैयार रहना चाहिए कि जब भी परमेश्वर कि ओर से अवसर मिले तो वह गवाही दे।

1. गवाही कैसे दें

1. मसीह की गवाह के लिए अवश्य है कि वह स्वयं उद्धार पाई हुई हो - रोमियों 5:9-11
2. अपने मन-परिवर्तन और अपने जीवन में आए बदलाव की सरल सच्चाइयों को बताइए - भजन संहिता 51:12-13 (क्रमांक 3 देखिए)।
3. अपनी प्रार्थनाओं को मिले उत्तर बताइए - भजन संहिता 50:15
4. बताइए कि किस प्रकार मसीह आपको सम्पूर्ण रूप से सन्तुष्ट करता है - भजन संहिता 107:8-9
5. पाप और परीक्षाओं पर पाई गई व्यक्तिगत विजय के विषय में बताइए - 1 यूहन्ना 5:4-5
6. अपने मन-पसन्द बाइबल पदों के विषय में बताइए और यह कि किस प्रकार आज प्रात: पवित्र-शास्त्र के विशिष्ट हिस्से के द्वारा परमेश्वर ने आपसे बातचीत की है।
7. अपने मित्रों को मसीह यीशु का सुसमाचार दीजिए। उन्हें मसीह यीशु के विषय में बताइए? - रोमियों 1:16
8. उन्हें आमंत्रित कीजिए की वे स्वयं आकर देखें - यूहन्ना 1:29-51
9. उन्हें यीशु के पीछे चलना सिखाइए - मत्ती 4:12-27; मरकुस 1:16-20

2. लोगों के सामने यीशु मसीह को स्वीकार करने में आनेवाली रुकावटें

1. लोगों से भय लगना - 2 तीमुथियुस 1:7; 1 यूहन्ना 4:18; फिलिप्पियों 4:13
2. सुसमाचार से लज्जित होना - 2 तीमुथियुस 1:8
3. स्वयं का अपवित्र जीवन - 1 यूहन्ना 1:9

नोट : गवाही न देने के कारण उत्पन्न होनेवाले खतरे के विषय में जानने हेतु यहेजकेल 33:8 पढ़िए।

3. अपनी व्यक्तिगत गवाही तैयार कीजिए

गवाही देने के अत्यधिक प्रभावशाली साधनों में से एक आपकी अपनी गवाही है कि मसीह के साथ आपका संबंध क्या है तथा उसके कारण आपके जीवन पर क्या प्रभाव हुआ है। अपनी चंगाई के बाद अन्धे व्यक्ति ने धार्मिक अगुवों को गवाही दी थी, "मैं एक बात जानता हूँ कि मैं अन्धा था और अब देखता हूँ" (यूहन्ना 9:25ख)। कुछ लोग धर्मशास्त्र की बातों पर आपत्ति करेंगे, इस इच्छा से कि सिद्धान्त या किसी दृष्टिकोण पर वाद-विवाद करें, परंतु मसीह यीशु के द्वारा परिवर्तित किए गए जीवन की गवाही का खण्डन करना कठिन होता है।

आपकी व्यक्तिगत गवाही में तीन भाग होने चाहिए:

1. **मसीही बनने के पहले आपका जीवन कैसा था - मसीह के पास आने के पहले आपका जीवन कैसा था इसका वर्णन कीजिए।** विशेषत: खोखलेपन तथा निराशा की उन भावनाओं का खास उल्लेख करते हुए जो अविश्वासियों में सामान्यत: पाई जाती हैं। यह निश्चित कीजिए कि आप किसी पाप के विषय में बहुत अधिक जोर देकर नहीं बताएंगी ताकि पापमय जीवन की बड़ाई न करें।

2. **आपने यीशु के विषय में कब, कहाँ सुना और उसे अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करने का निर्णय क्यों लिया इसका वर्णन कीजिए।** जब आप इस बात का वर्णन करती होंगी कि आप किस प्रकार कायल हुई थी, तब (मन में) प्रार्थना कीजिए कि जिसे आप गवाही दे रही हैं उसके भी जीवन में पवित्र आत्मा काम करे, उसमें पश्चात्ताप तथा पाप के प्रति खेद की आत्मा उत्पन्न करे।

3. **मसीही होने के बाद से आपका जीवन कैसे परिवर्तित हुआ है यह बताइए।** स्वर्ग के राज्य की नागरिक हो जाने के कारण आपको जो आनन्द तथा शान्ति मिलती रहती है उसके विषय में बताइए। परमेश्वर ने आपके जीवन में जो परिवर्तन लाया है उसके विषय में विशिष्ठ रीति से बताइए।

4. **बाइबल के पदों का उपयोग कीजिए।**

अभ्यास-कार्य

उपरोक्त प्रत्येक बिन्दु पर संक्षिप्त परिच्छेद लिखिए। परमेश्वर से पूछिए कि आपकी गवाही कैसे अत्यंत प्रभावकारी हो सकती है।

टिप्पणियां

3 पांच उँगलियों द्वारा सुसमाचार-प्रचार

सुसमाचार-प्रचार की इस सरल पद्धति के लिए किसी विशेष साधन या पुस्तक की आवश्यकता नहीं होती। एक हाथ की उँगलियों का प्रयोग करते हुए उद्धार की योजना का स्पष्टीकरण किया जाता है। इस पद्धति के लिए आवश्यक होता है कि आप उपयोग में लाए जानेवाले वचनों को रट लें, परन्तु यह पद्धति इतनी व्यावहारिक होती है कि आप सुसमाचार बताने के लिए सर्वदा तैयार होते हैं। यदि सुननेवाला इच्छुक जान पड़ता है, और यदि ऐसा करना उचित लगता है, तो आप उसका हाथ पकड़कर प्रत्येक उँगली को संकेत करते हुए उसका अर्थ बता सकती हैं।

1 **पहली उँगली - *परमेश्वर आपसे प्रेम करता है*** *(यूहन्ना 3:16)।*
"परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।"

2 **दूसरी उँगली - सबने पाप किया है (रोमियों 3:23)।**
"सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"

3 ***तीसरी उँगली - यीशु मसीह ने आपके पापों की कीमत चुकाने के लिए अपने प्राण दिए*** *(1 कुरिंथियों 15:3,4)।*
"पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, और गाड़ा गया; और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।"

4 **चौथी उँगली - विश्वास कीजिए कि यीशु मसीह आपके पापों के लिए मरा (यूहन्ना 1:12)।**
"जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं।"

5 **पाँचवी उँगली - जब आप यीशु में विश्वास करते है, तब आप अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं (रोमियों 6:23)।**
"पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"

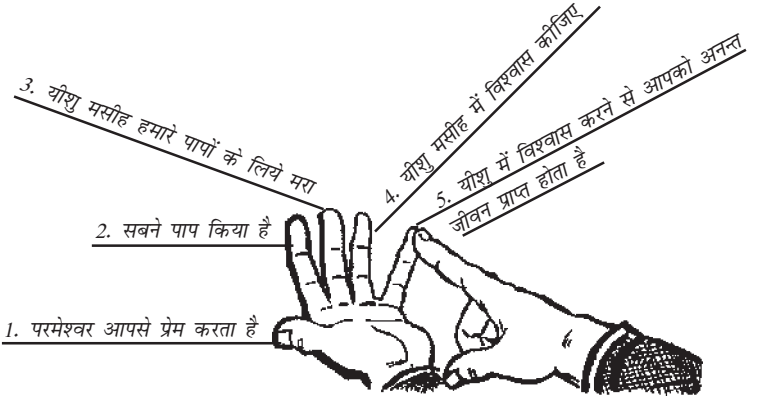

सुनने वाले को निर्णय लेने तथा
उद्धार पाने के लिए प्रार्थना करने प्रोत्साहित कीजिए।

टिप्पणियां

4 उद्धार का रोमी रास्ता

रोमियों की पुस्तक के वचनों का उपयोग करते हुए उद्धार के रास्ते का स्पष्टीकरण किया जा सकता है। रोमी रास्ते को दिए गए क्रम में ही बताया जाना चाहिए। इन वचनों को आपकी बाइबल में चिन्हित कर लेना सहायक होगा। सुसमाचार सुनाने की इस पद्धति का मुख्य लाभ यह है कि सारे वचन एक ही पुस्तक में पाए जाते हैं जिस के कारण उन्हें खोजना सरल और सहज होता है। जब आप चौथा बिन्दु बता देते हैं तक सुननेवाले से यह अनुरोध करते हुए पूरा करना निश्चित करें कि क्या वह मसीह को उद्धारकर्त्ता ग्रहण करने के लिए प्रार्थना करना पसंद करेगा।

1 **मनुष्य की आवश्यकता - (रोमियों 3:23)।** सब ने पाप किया है और सब को पाप-क्षमा की आवश्यकता है।

"सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"

2 **पाप का दण्ड - (रोमियों 6:23)।** पाप का दण्ड मृत्यु है।

"पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।"

3 **परमेश्वर का प्रबन्ध - (रोमियों 5:8)।** परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु के द्वारा पाप का दण्ड चुकाने का मार्ग उपलब्ध कराया है।

"परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।"

4 **मनुष्य का प्रत्युत्तर - (रोमियों 10:9)।** पापों को मान लीजिए, मसीह में विश्वास कीजिए, पाप-क्षमा प्राप्त कीजिए।

"यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।"

अभ्यास-कार्य

इन चार वचनों को अपनी बाइबल में चिन्हित कीजिए और उन्हें याद कर लीजिए।

5 शब्द-रहित पुस्तक

आप अपनी बाइबल तथा इस अद्‌भुत छोटी पुस्तिका के द्वारा किसी को भी सुसमाचार बता सकती हैं। सुननेवाले व्यक्ति को आपके साथ बातचीत में भाग लेने दीजिए। वाक्यांशों में दिए गए पदों के हवाले आपके अध्ययन के लिए हैं। कुछ पद गवाही के दौरान उपयोग में लाने हेतु दिए गए हैं। कोष्ठक ( ) में दिए गए निर्देश आपकी सहायता करेंगे। अपना परिचय देते हुए वार्तालाप आरंभ कीजिए। सुननेवाले का नाम भी पूछ लीजिए ताकि वार्तालाप के दौरान आप उसका नाम लेकर बातचीत कर सकें। इस को निश्चित रूप से उत्साह के साथ बताइए। यह आपके सुननेवाले के लिए उद्धार का मार्ग है।

श्रेष्ठ समाचार

क्या आपने कभी शब्द-रहित या चित्र-रहित पुस्तक देखी है? *(पृष्ठों को पलटते हुए रंगों को दिखाइए।)* रंगीन पृष्ठों की यह पुस्तक बाइबल से एक अद्‌भुत समाचार सुनाती है जो उस सच्चे और जीवित परमेश्वर के विषय में है जिसने जगत की रचना की है। मैं इस पुस्तक को शब्द-रहित पुस्तक कहती हूं। प्रत्येक रंग मुझे समाचार के एक भाग को स्मरण दिलाता है। क्या आप इसे सुनना पसंद करेंगे? *(सुननेवाले के उत्तर की प्रतीक्षा कीजिए।)*

सुनहरा पृष्ठ खोलिए

(अनुभव से देखा गया है कि सुनहरे पृष्ठ से, परमेश्वर के प्रेम पर जोर देते हुए, आरम्भ करना बुद्धिमानी है।)

यह सुनहरा पृष्ठ मुझे स्वर्ग का स्मरण दिलाता है। क्या आप जानते हैं कि स्वर्ग क्या है? *(उत्तर की प्रतीक्षा कीजिए।)* स्वर्ग परमेश्वर का निवास-स्थान है। बाइबल हमें बताती है कि स्वर्ग में नगर की सड़क स्वच्छ कांच के समान चोखे सोने की है (प्रकाशितवाक्य 21:21)। परमेश्वर हमें अपने निवास-स्थान के विषय में अनेक बातें बताता है। वहाँ कोई कभी बीमार नहीं होता। कोई कभी मरता नहीं। वहाँ रात नहीं है। स्वर्ग में हर एक जन पूर्णत: आनन्दित होगा - सर्वदा के लिए! (प्रकाशितवाक्य 21:4-23)। स्वर्ग की सर्वाधिक अद्‌भुत बात यह है कि वहाँ परमेश्वर पिता और उसका पुत्र प्रभु यीशु हैं।

परमेश्वर ने सारी सृष्टि की रचना की है। उसने आपको भी बनाया, और वह आप से अत्यधिक प्रेम करता है। बाइबल कहती है, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा . . ." (यूहन्ना 3:16)। इसका अर्थ यह हुआ कि वह प्रत्येक मनुष्य से प्रेम करता है - इसमें आप और मैं भी सम्मिलित हैं। इसलिए कि परमेश्वर ने आपको बनाया और आप से प्रेम करता है, वह चाहता है कि आप उसके परिवार के सदस्य बनें और किसी दिन उसके साथ स्वर्ग में हों (यूहन्ना 14:2)। स्वर्ग कैसा विशेष स्थान है! वह एक सिद्ध स्थान है क्योंकि परमेश्वर सिद्ध है। परन्तु एक बात है जो स्वर्ग में कभी भी नहीं हो सकती।

काला पृष्ठ खोलिए

(इस पृष्ठ का उपयोग सुननेवाले की आत्मिक आवश्यकताओं पर जोर देने के लिए कीजिए।)

वह एक बात पाप है। यह काला पृष्ठ मुझे पाप का स्मरण दिलाता है। इसलिए कि आप और मैं पापी हैं, हम परमेश्वर की नहीं परन्तु अपनी इच्छा से चलना चाहते हैं। अपनी इच्छा से चलने की चाहत पाप है। गंदी बातें करना या बोलना या सोचना पाप है। परमेश्वर ने अपनी पुस्तक बाइबल में जो नियम दिए हैं उनका पालन न करना पाप है। पाप के कारण हमारे संसार में दु:ख होता है। क्या आप उन कुछ बातों के विषय में बता सकते है जो पाप हैं? *(उत्तर की प्रतीक्षा कीजिए।)* क्या आप जानते हैं कि आप पापी हैं? परमेश्वर का वचन कहता है, "क्योंकि सब ने पाप किया है" (रोमियों 3:23)। सब का अर्थ हुआ हम में से प्रत्येक जन, जिसमें आप और मैं भी सम्मिलित हैं। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है क्योंकि परमेश्वर सिद्ध रूप से सही है - उसमें कुछ भी पाप नहीं। परमेश्वर जहाँ है वहाँ वह पाप की अनुमति नहीं दे सकता।

परमेश्वर ने कहा है कि पाप का दण्ड मिलना अवश्य है। पाप का दण्ड मृत्यु है - अर्थात् परमेश्वर से सर्वदा के लिए अलग कर दिया जाना (रोमियों 6:23)। परमेश्वर जानता था कि ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे करने से आप पाप से छुटकारा पा सकते हैं। वह जानता था कि आप उसे प्रसन्न करने के योग्य कुछ भी भलाई नहीं कर सकते हैं। परन्तु वह आप से प्रेम करता है और चाहता है कि आप उसकी संतान बनें। इसलिए उसने एक मार्ग तैयार किया है कि आपको पापों की क्षमा मिले।

लाल पृष्ठ खोलिए

(इस पृष्ठ का उपयोग, यीशु की मृत्यु के द्वारा उद्धार का मार्ग कैसे संभंव हुआ है इसके महत्व को बताने के लिए कीजिए।)

लाल रंग उस एक मार्ग को दर्शाता है। परमेश्वर आप से बहुत अधिक प्रेम करता है। उसने अपने पुत्र प्रभु यीशु मसीह को स्वर्ग से इस पृथ्वी पर भेजा। उसने एक बालक के रूप में जन्म लिया। वह बढ़ता गया और एक मनुष्य बना। यीशु उस हर एक व्यक्ति से भिन्न था जिसने इस पृथ्वी पर जीवन बिताया है। यीशु ने कभी कोई पाप नहीं किया। वह सिद्ध, पवित्र है।

परन्तु एक दिन, दुष्ट लोगों ने उसके सिर पर काटों का मुकुट रखा और उसे कीलों के द्वारा क्रूस पर चढ़ाया दिया। बाइबल बताती है कि जब वह वहाँ चढ़ाया गया था तब परमेश्वर ने हम सब के पापों को उसके ऊपर रखा (यशायाह 53:6)। आपका सब क्रोध, आपके सारे झूठ और आपकी सारी नीचता अर्थात् आपके सारे पापों को परमेश्वर के पुत्र पर रख दिया।

जब यीशु को कीलों के द्वारा क्रूस पर चढ़ाया गया था, उसके हाथ और पावों से क्या बहा था? (लहू, रक्त) बाइबल बताती है कि लहू बहाए बिना पाप-क्षमा नहीं है (इब्रानियों 9:22)। आपके पापों के लिए आपको मिलनेवाले दण्ड को यीशु ने सह लिया। उसने इतना सबकुछ सहा! तब उसने ऊँचे शब्द से कहा, "पूरा हुआ।" प्रभु यीशु पृथ्वी पर आया था कि हमारे पापों के दण्ड को सह ले। और उसने उस कार्य को पूरा किया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिए। बाइबल बताती है, "यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया और गाड़ा गया" (1 कुरिंथियों 15:3)। परन्तु तीन दिनों के बाद सब से अधिक अद्‌भुत बात घटी। परमेश्वर ने उसे पुनः जीवित कर दिया। उसने मसीह यीशु को मृत्यु में से जीवित किया। यीशु जीवित उद्धारकर्त्ता है (1 कुरिंथियों 15:4)। वह आपको आपके पापों से उद्धार देने के लिए आपका उद्धारकर्त्ता बनना चाहता है।

(पूछिए कि क्या वह निर्णय लेने के लिए तैयार है, और निमंत्रण की प्रार्थना करने कहिए।)

सफेद पृष्ठ खोलिए

(इस पृष्ठ का उपयोग सुननेवाले के प्रत्युत्तर पर - यीशु में अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में विश्वास करने पर - जोर देने के लिए कीजिए।)

यह पृष्ठ मुझे स्मरण दिलाता है कि आप अपने पापों से शुद्ध किए जा सकते हैं (भजन संहिता 51:7)। इसके विषय में परमेश्वर ने हमें बाइबल में बताया है। *(उसे आपके साथ यह वचन पढ़ने दीजिए।)* "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)। हाँ, परमेश्वर आपसे प्रेम

करता है। परमेश्वर कहता है कि यदि आप यीशु में विश्वास करेंगे तो आप नाश नहीं होंगे – आप परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग नहीं किए जाओगे। वह आपके पापों को क्षमा करेगा और आपको परमेश्वर की दृष्टि में शुद्ध करेगा। परमेश्वर कहता है, "जो कोई विश्वास करे।" हम "जो कोई" के स्थान पर अपना नाम रख सकते हैं। यदि आप यीशु में विश्वास करते हैं कि वह उद्धारकर्त्ता है, तो वह आपको अनन्त जीवन देगा। यही वह जीवन है जिसकी आपको आवश्यकता है कि आप स्वर्ग में परमेश्वर के साथ जीवन प्राप्त कर सकें। यदि आप यीशु पर विश्वास करते हैं कि वह आपका उद्धारकर्त्ता है तो वह आपके पापों को क्षमा करेगा, और वह आपके साथ सर्वदा रहेगा और आपको सामर्थ्य देगा कि आप परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें। आप आज यीशु को बता सकते हैं कि आपने पाप किया है, और आप विश्वास करते हैं कि उसने आपके लिए अपने प्राण दिए। बाइबल कहती है कि यदि आप पश्चात्ताप करते हैं, अर्थात् अपने पापों से मन फिराते हैं, तो वे मिटाए जा सकते हैं (प्रेरितों 3:19)। बाइबल यह भी बताती है कि यदि आप प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं तो आप उद्धार पाओगे (प्रेरितों 16:31)। क्या आप अभी मेरे साथ यह करना चाहोगे? *(यदि उत्तर हाँ है तो सुननेवाले के साथ प्रार्थना कीजिए कि वह मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करे।)*

हरा पृष्ठ खोलिए

(इस पृष्ठ पर आत्मिक वृद्धि के विषय में बल देकर बताइए।)

हरा रंग मुझे उन वस्तुओं का स्मरण दिलाता है जो वृद्धि करती हैं, जैसे कि पत्तियाँ, घांस, फूल और वृक्ष। यह पृष्ठ मुझे नये जीवन का, अनन्त जीवन का स्मरण दिलाता है जिसे आपने परमेश्वर से पाया है। जब आप प्रभु यीशु पर विश्वास करते हैं कि वह आपको आपके पापों से उद्धार दिलानेवाला है तब आप परमेश्वर के परिवार में एक नये जन्मे बालक के समान हैं। परमेश्वर चाहता है कि आप का विशेष रूप से विकास हो। बाइबल आपसे कहती है, "प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के . . . पहचान में बढ़ते जाओ" (2 पतरस 3:18)।

जैसे-जैसे आप बाइबल से यीशु मसीह के विषय में अधिकाधिक जानते जाएंगे, आप जान लेंगे कि पाप से कैसे दूर रहना है (भजन संहिता 119:11)। प्रतिदिन उससे माँगिए कि वह आपकी सहायता करे कि आप उसकी आज्ञाओं का पालन करें। यदि कभी आप से पाप हो भी जाए, तो परमेश्वर से कहिए कि आपने पाप किया है। वह तुरन्त आपको क्षमा करेगा। बाइबल कहती है, "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने

में विश्वासयोग्य और धर्मी है" (1 यूहन्ना 1:9)। उससे प्रार्थना कीजिए कि आपकी सहायता करे कि आप उस गलत बात को पुन: न करें।

(उस व्यक्ति की अगुवाई करें कि वह परमेश्वर को उसकी सहायता की प्रतिज्ञा के लिए धन्यवाद दे।)

1. परमेश्वर से बात कीजिए - प्रार्थना कीजिए (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। बाइबल कहती है कि हम निरन्तर प्रार्थना में लगे रहें।
2. परमेश्वर की बात सुनिए - पढ़ने तथा रट लेने के द्वारा परमेश्वर का वचन सीखिए (भजन संहिता 119:11)।
3. परमेश्वर के लिए बात कीजिए - औरों को उसके विषय में बताइए, गवाही दीजिए (मरकुस 16:15)।
4. परमेश्वर की आराधना कीजिए - सन्डे स्कूल तथा कलीसिया की आराधना में जाइए (इब्रानियों 10:25)।

इसके पहले कि वह व्यक्ति चला जाए,

1. उसे कोई पर्चा (ट्रैक्ट) या पत्राचार पाठ्यक्रम दीजिए।
2. उससे प्रार्थना करवाइए जिसमें वह प्रभु यीशु मसीह का उन बातों के लिए जो उसने उसके लिए की हैं धन्यवाद करेगा।
3. उसके लिए प्रार्थना कीजिए।
4. आगे सम्पर्क बनाए रखने के लिए उससे अनुरोध कीजिए कि वह अपना नाम और पता आपको दे।

(शब्द-रहित पुस्तक के निर्देश *चाइल्ड इवेन्जेलिझ्म फेलोशिप* की सौजन्य से)

चर्चा के लिए प्रश्न

1. सुसमाचार-प्रचार करने की कौनसी पद्धति आपके उपयोग के लिए सर्वाधिक प्रभावकारी है? क्यों?
2. वे कौनसे स्थान और समय हो सकते हैं जहां आप शब्द-रहित पुस्तक का उपयोग कर सकती हैं?

प्रार्थना

स्वर्गीय पिता, सुसमाचार-प्रचार करने के इन तरीकों को याद कर लेने में मेरी सहायता कीजिए। मेरे पास उन लोगों को भेजिए जो सुनने के लिए इच्छुक होंगे, और जिनका हृदय उद्धार पाने के लिए कोमल होगा। आमीन।।

टिप्पणियां

8 सामरी स्त्री आत्मा-जीतनेवाली/गवाह

मुख्य पद: रोमियों 1:16क

"मैं सुसमाचार से नहीं लजाता,
इसलिए कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिए . . .
उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।"

सामरी स्त्री से संबंधित शास्त्रभाग: यूहन्ना 4:4-42

प्रस्तावना

1. यीशु, परमेश्वर द्वारा नियोजित एक भेंट के निमित्त, पवित्र आत्मा के द्वारा, बाध्य किया गया था कि सामरिया से होकर जाए।
2. यहूदी यात्री सामान्यत: सामरिया के बाहर से घूमकर कुछ छ: दिनों की यात्रा करके जाते थे ताकि वे उन सामरियों के साथ किसी भी प्रकार का संपर्क करने से बचे रहें जिन्हें वे इसलिए तुच्छ समझते थे क्योंकि वे शुद्ध यहूदी नहीं थे; उन्होंने अन्यजातियों से विवाह किया था।
3. यीशु, अपने शिष्यों के साथ, 42 मील की दूरी चलकर गया ताकि एक महिला का जीवन परिवर्तित करने के उद्देश्य से उसके साथ आकस्मिक भेंट करे। इससे प्रगट होता है कि यीशु ने महिलाओं के जीवन को बहुत मूल्यवान समझा था।

सामरी स्त्री के जीवन से लिए गए आत्मा-जीतनेवाली के गुण,

1. **आत्मा-जीतनेवाली मात्र एक पापी है *जिसने मसीह में उद्धार पाया है* (प्रेरितों 4:12)**

   क. सामरी स्त्री हम सब का प्रतीक है; पवित्रशास्त्र में उसका नाम भी नहीं दिया गया है।

   ख. उसके सामने अनेक प्रकार की बाधाएं थीं:

   - जातीय/गैर यहूदी - वह सामरी थी (वचन 9)।
   - सामाजिक - वह व्यभिचारीणी थी (वचन 18)।
   - धार्मिक - वह उस समूह से थी (सामरी) जिनकी आराधना का ढंग यहूदियों से भिन्न था (वचन 21-23)।
   - यीशु ने जब उससे बातचीत की तब उन बाधाओं को नहीं माना (वचन 7)।

   ग. उसके सामने गंभीर नैतिक समस्याएं थीं (वचन 16-18):

   - वह दयनीय ढंग से पाप की गुलाम थी।
   - उसके रिश्ते उसकी आत्मा की गहरी अभिलाषा को तृप्त करने में असफल हुए थे (भजन संहिता 38:4)।

   घ. यीशु मसीह से हुई एक भेंट ने उसके जीवन को सदा के लिए बदल दिया:

   - यीशु ने सहनशीलता के साथ उसके सारे प्रश्नों के उत्तर दिए (वचन 12-26)।
   - यीशु ने सत्य की ओर उसकी अगुवाई की (वचन 24)।
   - यीशु ने उसकी उद्धारकर्ता की आवश्यकता को पूरा किया (वचन 26)।

   ङ यीशु उसे वह एक मात्र बात देने आया था जिसकी उसे सर्वाधिक आवश्यकता थी: उद्धार - नया जीवन!

   - यीशु ने उसके अस्तित्व को ही बदल दिया- वह सारी बाधाओं पर जय पाते हुए उन्हीं लोगों को सुसमाचार सुनाने गई जिन्होंने उसे बहिष्कृत किया था (28-29)।
   - यीशु ने उसके मिशन को बदल दिया- अब उसका प्राथमिक उद्देश्य गवाह बनना था (वचन 39)।

- यीशु ने उसके वातावरण को बदल दिया- उसका सम्पूर्ण नगर विश्वासी हो गया (वचन 42)।
- अंततः यीशु विश्वासिनियों को अपनी उपस्थिति प्रदान करता है (निर्गमन 33:14; मत्ती 1:23), और इसी के कारण वे आत्मा-जीतनेवालियां बनती हैं।

2. आत्मा-जीतनेवाली एक ऐसी विश्वासिनी होती है *जिसने यीशु में, जीवन के जल में, तृप्ति पाई है* (यूहन्ना 4:10-15)।

क. विश्वासिनियों को यीशु में ही सच्ची तृप्ति प्राप्त होती है क्योंकि उन्हें अनंत मृत्यु से छुड़ाने के लिए परमेश्वर के द्वारा दिया गया दान यीशु ही है (वचन 10; यूहन्ना 3:16; 2 कुरिंथियों 9:15)। जो इस तृप्ति को पा लेती है, वह उसका शुभ संदेश औरों को सुनाने के लिए अधीर रहती है (वचन 28-29)।

ख. जीवन के लिए जल अति आवश्यक है। मानव शरीर तथा पृथ्वी का 70% हिस्सा जल से भरा है। यीशु ने कुंअे के जल का उदाहरण दिया ताकि उस तृप्ति को समझाए जो एक विश्वासिनी यीशु से मिलनेवाले उद्धार में प्राप्त करती है। **यीशु सम्पूर्ण तृप्ति देता है, क्योंकि वहः**

- **जीवन का जल है (वचन 10)।** यीशु अनंत जीवन लाता है (वचन 14)।
- **संतोष देनेवाला जल है (वचन 13)।** हमारी आत्मिक प्यास मात्र यीशु के ही द्वारा पूरी की जाती है। जो उसके पास आती है वह आत्मिक रीति से कभी भूखी नहीं होगी; और जो उसमें विश्वास करती है वह आत्मिक रीति से कभी प्यासी नहीं होगी (यूहन्ना 6:35)।
- **शुद्ध करनेवाला जल है (वचन 16-19)।** यीशु से हुई उस भेंट ने सामरी स्त्री को उसके पापों से शुद्ध करते हुए उसे पूर्णतः परिवर्तित कर दिया था। वह बदलाव देखा जा सकता था। जबकि उसे सामाजिक स्तर पर स्वीकार नहीं किया जाता था, (जिस कारण से उसे भरी दोपहरी में कुंअे से जल निकालने के लिए अकेले ही आना पड़ता था), तौभी वह मसीह से संबंधित सुसमाचार सारे नगर को बताने के लिए दौड़

गई (वचन 28-29)। आज भी, यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है और हमें नयी सृष्टि बनाता है (2 कुरिंथियों 5:17)।

- **उमंड़नेवाला जल है (वचन 14)।** जो जल (तृप्ति) यीशु देता है वह विश्वासिनी के हृदय में उमंड़ते जल का सोता बन जाता है (यूहन्ना 7:37-39)। जब विश्वासिनी पवित्र आत्मा को पाती है तब यीशु उसमें निरंतर जीवन देनेवाला स्त्रोत बन जाता है।

ग. सामरी स्त्री के समान, आत्मा-जीतनेवाली के जीवन से प्रदर्शित होना चाहिए कि उसने जीवन के जल को पिया है (अर्थात् उसे यीशु में उद्धार प्राप्त हुआ है)। उस जल की बहुतायत हर एक व्यक्ति पर छलकनी चाहिए ताकि उसके द्वारा वह अधिकाधिक लोगों तक सुसमाचार लेकर पहुंचेगी।

3. **आत्मा-जीतनेवाली वह होती है *जिसके पास संदेश होता है* (यूहन्ना 4:29)।** आत्मा-जीतनेवाली के पास, इसलिए कि वह यीशु के द्वारा बचाई हुई और निरंतर उसमें तृप्त है, सामरी स्त्री के समान सुनाने के लिए एक संदेश होता है:

क. **सत्य का संदेश:** "आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया" (वचन 29)। वह बहुत अच्छे से जानती थी कि जो कुछ यीशु ने बताया था वह सच था। हमारे पास उस यीशु का संदेश है जो स्वयं सत्य है (यूहन्ना 14:6)।

ख. **आशा का संदेश:** "कहीं यही तो मसीह नहीं है?" (वचन 29)। उसके पास शुभ संदेश था कि उनके नगर में मसीह आया है। वास्तव में सामरी लोग, जो आत्मिक अंधकार, व्यवस्था एवं विधियों में दबे थे, अधीरता से मसीह के आने की बाट जो रहे थे। वह उनके पास आशा का संदेश ले गई: वह मसीह हो सकता है! वह निश्चय ही मसीह है (वचन 26)!

ग. **आह्वान का संदेश:** "कहीं यही तो मसीह नहीं है?" (वचन 29)। वह उनकी उत्सुकता को सोचने और कार्य करने के लिए उभार रही थी।

घ. **निमंत्रण का संदेश:** "आओ, एक मनुष्य को देखो . . ." (वचन

29)। उसने, अपने सत्य, आशा और आह्वान के संदेश के द्वारा, उन्हें निमंत्रण दिया कि वे आएं और व्यक्तिगत रीति से यीशु का अनुभव प्राप्त करें।

4. आत्मा-जीतनेवाली एक *उत्साही गवाह होती है* (यूहन्ना 4:28)।

वह होती है:

क. **आनंदित (वचन 28)।** सामरी स्त्री के पास इतना आनंद था कि उसने अपना घड़ा कुंअे पर छोड़ दिया! उसने जीवन के जल (यीशु) को पा लिया था और शुद्ध, तृप्त और अनंत जीवन के आनंद से उमंड़नेवाली बन गई थी।

ख. **साहसी (वचन 28)।** वह अपने नगर में वापस गई, जबकि वहां उसका नाम बदनाम था। वह उन्हीं के पास गई जिन्होंने उसे बहिष्कृत किया था।

ग. **निडर (वचन 29)।** उसने उन्हें चुनौती दी, "आओ और देखो।" उसने घोषणा कर दी कि यीशु ही मसीह हो सकता है। उन्हें यीशु के पास लाने हेतु उसने उनकी उत्सुकता पर भरोसा किया था।

घ. **संकोचहीन (वचन 29)।** उसने कहा, "जिसने सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया।" इस वाक्य में उसने उन बातों को मान लिया जो उसने पहले की थीं, जो उसके लिए तब तक लज्जाजनक थीं जब तक वह यीशु के द्वारा शुद्ध नहीं की गई थी। उसने उन्हें अपने जीवन-परिवर्तन की गवाही देने में संकोच नहीं किया था।

ङ **उत्साही (वचन 29)।** वह तुरंत गवाही देने गई। उसने अपना समय व्यर्थ नहीं गंवाया। उसने किसी से सलाह नहीं ली। वह अपने साहस के परिणामों से भयभीत नहीं हुई। उसने वह बिलकुल सही समय पर किया- यीशु अपने मार्ग पर अगले नगर जा रहा था।

च. **फलदाई (वचन 39-42)।** उसकी गवाही के कारण, उसके नगर के बहुत-से सामरियों ने आकर यीशु पर विश्वास किया। यीशु ने स्वयं उन्हें शिष्यता की कुछ बातें सिखाईं, ताकि उनका विश्वास उनका व्यक्तिगत अनुभव हो जाए। उनका विश्वास *यीशु* में था, उस *स्त्री* में नहीं। यह अच्छी गवाह का एक गुण है- वह लोगों को यीशु मसीह में उद्धार दिलानेवाला विश्वास करने की ओर ले आती है।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. सामरी स्त्री, अपने पापमय जीवन के कारण, उसके समाज के द्वारा दिया गया दण्ड सह रही थी। यीशु ने उस बाधा को पार किया ताकि उसे गवाही दे सके। किस प्रकार आप सुसमाचार सुनाने के प्रयास में उन बाधाओं पर विजय पा सकते हैं जो आपकी संस्कृति द्वारा निर्माण की गई हैं?

2. वे छः गुण कौनसे हैं जो सामरी स्त्री के समान गवाही देने के लिए उत्साही व्यक्ति में होते हैं? क्या आप एक उत्साही गवाह हैं? हैं तो क्यों? नहीं है तो क्यों नहीं?

प्रार्थना

प्रभु, मुझे फलदायी गवाह बना। मेरी सहायता कर कि मैं आनंद से भरपूर रहूं और साहस तथा निर्भयता के साथ औरों को वह बता सकूं जो मैं यीशु अर्थात् जीवन के जल के बारे में जानती हूं। तब मेरी सहायता कर कि मैं शिष्य-बनानेवाली बनूं और जिन्हें मैं शिष्य बनाऊं उनकी भी सहायता कर कि वे भी अच्छा फल लानेवाले बनें। आमीन।।

टिप्पणियां

9 नाओमी और रूत: अच्छी शिष्यता के लिए सलाह देना

मुख्य पद: तीतुस 2:3-4क

"इसी प्रकार, बूढ़ी स्त्रियों का चाल-चलन पवित्र लोगों सा हो,
दोष लगानेवाली और पियक्कड़ नहीं; पर अच्छी बातें सिखानेवाली हों,
ताकि वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें।"

पवित्रशास्त्र का पाठ: रूत की पुस्तक

प्रस्तावना:

1. शिष्यता की रीति का नमूना यीशु के द्वारा तैयार किया गया था। उसने 12 शिष्यों को चुना था, परंतु उनमें से तीन (पतरस, याकूब और यूहन्ना) को घनिष्ठ शिष्य बनने के लिए चुन लिया था। वे बहुत ही कम समय के लिए साथ रहे, परंतु वह *गुणवत्ता-पूर्ण* समय था।

2. शिष्य-बनानेवाली का लक्ष्य संभावित अगुवों को वृद्धि करने के लिए प्रोत्साहित करना, और उन्हें सेवकाई के लिए तैयार करना होता है (2 तीमुथियुस 4:1-2)। शिष्य-बनानेवाली के लिए दूसरा नाम "सलाहकार" है, जिसका अर्थ "बुद्धिमान तथा भरोसेमंद शिक्षक या परामर्शदाता" है। जिसे सलाहकार सिखाती है उसे "सलाह-प्राप्तकर्ता" कहते हैं।

3. इस सिद्धांत को इस पाठ में, बाइबल की रूत नामक पुस्तक पर ध्यान देते हुए, रूत (सलाह-प्राप्तकर्ता) तथा नाओमी (सलाहकार) के रिश्ते का अध्ययन करते हुए समझाया गया है।

अच्छी सलाहकार में पाई जानेवाली विशेषताएं

1. **अच्छी सलाहकार *सांस्कृतिक एवं सामाजिक बाधाओं पर ध्यान नहीं देती* (1:3-4)।** नाओमी यहूदी और रूत मोआबी थी।

   क. जातीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाएं हमारे संसार के हिस्से हैं, परंतु वे परमेश्वर के राज्य के हिस्से नहीं बनने चाहिए।

   ख. परमेश्वर के राज्य का नियम प्रेम है। प्रेम हमें बाध्य करता है कि हम औरों तक पहुंचे, उन तक भी जो हमारे समान नहीं हैं।

   ग. जब कभी हमें खोजना होता है कि हम किसको सलाह/शिक्षा दें, तब हमारी दृष्टि परमेश्वर के समान होनी चाहिए जो जातीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधााओं को नहीं देखता (2 पतरस 3:9)।

2. **अच्छी सलाहकार के पास *एक लक्ष्य होता है* (1:6-7)।** नाओमी जानती थी कि वह कहां जा रही है- वह यहूदा देश को लौट रही थी।

   क. सलाहकार के मन में एक निश्चित अंतिम लक्ष्य होना आवश्यक होता है। उसे निश्चित करना चाहिए कि इस रिश्ते से किन अंतिम परिणामों की अपेक्षा की जा रही है (नीतिवचन 29:18)?

   ख. शिष्यता आत्म-सुधार से बढ़कर है; यह किसी को मसीह के समान बनने के लिए शिक्षा देना है (2 कुरिंथियों 3:18)।

3. **अच्छी सलाहकार *सलाह-प्राप्तकर्ता को स्वयं निर्णय लेने की अनुमति देती है* (1:8-9)।** नाओमी ने ओर्पा और रूत को अनुमति दी थी कि वे क्या करेंगी इसका चुनाव वे स्वयं करें।

   क. परमेश्वर ने मनुष्यों को अधिकार दिया है कि वे क्या करेंगे इसका चुनाव वे स्वयं करें (व्यवस्थाविवरण 30:19)।

   ख. सलाहकार की भूमिका यह कदापि नहीं होती कि मार्ग का चुनाव कर लें और सलाह-प्राप्तकर्ता को उसे अपनाने के लिए बाध्य करें।

   ग. अच्छी सलाहकार सही मार्ग को स्पष्ट रीति से प्रस्तुत करती हैं और सलाह-प्राप्तकर्ता को उसे स्वीकार या अस्वीकार करने की अनुमति देती हैं।

   घ. सलाहकार को दृढ़तापूर्वक कहनेवाली तथा स्नेही होना चाहिए, चाहे सलाह-प्राप्तकर्ता कोई गलती क्यों न करे।

4. **अच्छी सलाहकार *ईश्वरीय निगरानी रखती है* (2:19)।** नाओमी ने रूत को जवाबदेही होने के लिए प्रोत्साहित किया था।

   क. सलाहकार अपनी सलाह-प्राप्तकर्ता के संपर्क में बनी रहती है और उसके मूर्खतापूर्ण कामों पर नरमी से सलाह देती है।

   ख. सलाह-प्राप्तकर्ता को जवाबदेही ठहराने का उद्देश्य उस पर नियंत्रण रखना नहीं परंतु उसे शिक्षा देना एवं उसकी परवरिश करना होता है।

5. **अच्छी सलाहकार *अपने ज्ञान और बुद्धिमत्ता को बांटती हैं* (2:20)।** नाओमी यहूदी संस्कृति एवं परंपराओं को जानती थी, रूत नहीं जानती थी। नाओमी ने रूत को उन बातों का ज्ञान दिया और उचित कदम उठाने में उसकी अगुवाई की।

   क. आवश्यक होता है कि सलाहकार अपने ज्ञान और कौशल द्वारा सलाह-प्राप्तकर्ता की सहायता करें ताकि वह आगे के जीवन में सब बातों को बुद्धिमानी से ठीक रख सके।

   ख. ज्ञान की प्राप्ति परमेश्वर के वचन को जानने से तथा परमेश्वर के साथ समय बिताने से होती है। परमेश्वर ही जीवन तथा सेवकाई के हर एक पहलू से संबंधित परख देगा।

   ग. अच्छी सलाहकार का अंतिम लक्ष्य सलाह-प्राप्तकर्ता को अपने नहीं परंतु परमेश्वर के ज्ञान और बुद्धि पर निर्भर बनाना होता है।

6. **अच्छी सलाहकार *ईश्वरीय सलाह देती हैं* (2:22, 3:3-4)।** नाओमी ने अपनी बुद्धि का उपयोग रूत को अच्छी सलाह देने के लिए किया था।

   क. ईश्वरीय सलाह मात्र परमेश्वर के वचन से ही मिलती है। शिष्य बनाने में मानवीय बुद्धि या अवलोकन पर आधारित सलाह नहीं दी जानी चाहिए (नीतिवचन 2:6)।

   ख. सलाह देने में मात्र बोलना ही नहीं परंतु सुनना भी होता है (याकूब 1:19)।

   ग. सलाहकार का ईश्वरीय जीवन इस बात में सहायक ठहरता है कि सलाह-प्राप्तकर्ता उसके अधिकार के आधीन रहकर उससे उचित व्यवहार करे।

7. **अच्छी सलाहकार का *हृदय चिंता करनेवाला होता है* (3:1)।** नाओमी को रूत के भलाई की चिंता थी।

   क. सलाहकार को स्मरण रखना चाहिए कि वह अपनी सलाह-प्राप्तकर्ता के लिए परमेश्वर के प्रेम का माध्यम होती है।

   ख. पाप के विरुद्ध भयरहित होकर डांट-फटकार करने के साथ-साथ सहानुभूतिपूर्ण एवं कोमल बने रहने से सही संतुलन बना रहता है (इफिसियों 4:32)।

अच्छी सलाह-प्राप्तकर्ता में पाई जानेवाली विशेषताएं

1. **अच्छी सलाह-प्राप्तकर्ता *अपनी सलाहकार के प्रति समर्पण दिखाती है* (1:14-17)।** रूत नाओमी के प्रति समर्पित थी, उसके प्रति प्रेम, चिंता तथा आदर व्यक्त करती थी।

   क. वह इच्छुक थी कि नाओमी के परमेश्वर के प्रति समर्पित होने के लिए अपनी जीवन भर की मूर्तिपूजक भक्ति को त्याग दे (नीतिवचन 28:13; प्रेरितों 3:19)।

   ख. रूत के उस निर्णय ने, कि वह अपनी मां के घर न जाकर नाओमी के साथ जाने का चुनाव करेगी, उसके प्रेम को प्रगट किया (1 पतरस 1:22)।

2. **अच्छी सलाह-प्राप्तकर्ता *आज्ञाकारी होती है* (3:5)।** नाओमी के द्वारा निर्देश दिए जाने पर रूत ने ठीक वैसे ही किया जैसे कहा गया था।

   क. आज्ञाकारी हृदय नम्र भी होता है, और यह उस रिश्ते के लिए महत्वपूर्ण होता है जो शिष्यता की सफलता के लिए आवश्यक होता है (भजन संहिता 51:10-12)।

   ख. जो परमेश्वर के पास आते हैं उन्हें मात्र अपने विचारों के साथ ही नहीं परंतु अपने हृदय के साथ भी आना चाहिए (यूहन्ना 4:24)।

3. **अच्छी सलाह-प्राप्तकर्ता के पास *अपने सुझाव भी होते हैं* (2:2)।** रूत ने नाओमी से अनुमति मांगी कि वह उसे किसी खेत में सिला बीनने जाने दे।

   क. सलाह-प्राप्तकर्ता को रचनात्मक रूप से सोचना चाहिए और नए

सुझाव भी देने चाहिए, चाहे वे पहले परखे गए हो या नहीं (यशायाह 43:19)।

ख. चाहे असफल होने की संभावना दिखाई देती हो फिर भी कुछ नया करने का प्रयास करना यह एक ऐसा तरीका होता है जिससे शिष्याएं सीखती और वृद्धि करती जाती हैं।

4. **अच्छी सलाह-प्राप्तकर्ता *सच्ची और पूरी रिपोर्ट देती है* (2:19-22)।**

क. रूत ने नाओमी के प्रश्नों का उत्तर बिना भय के दिया था।

ख. उसने ईमानदारी से तथा पूरा-पूरा उत्तर दिया। रूत ने नाओमी को वह सारी बातें बताईं जो नाओमी को जानना आवश्यक थीं ताकि उसे अच्छी दिशा दिखा सके (1 पतरस 3:15)।

सलाह देने-लेने के रिश्ते की आशीषें

1. सलाहकार तथा सलाह-प्राप्तकर्ता दोनों परमेश्वर की आशीषों में सहभागी होती हैं (3:16-18; 4:14-16)। नाओमी रूत की आशीषों में हिस्सेदार हुई।

क. सलाह देने-लेने के रिश्ते का अंतिम लक्ष्य परमेश्वर के राज्य को लाभ पहुंचाना होता है और सब इस आशीष के भागीदार होते हैं।

ख. सलाहकार को सलाह-प्राप्तकर्ता की सफलता पर उसकी प्रशंसा करनी चाहिए, वह कभी भी उसकी जलन का कारण न ठहरे (1 पतरस 2:1)।

ग. तत्पश्चात् आशीषों को आगे बांटना चाहिए जबकि सलाह-प्राप्तकर्ता स्वयं सलाहकार बनने की भूमिका निभाती है।

2. सलाहकार तथा सलाह-प्राप्तकर्ता दोनो मिलकर दूसरों के लिए तथा परमेश्वर के राज्य के लिए आशीष का कारण ठहरती हैं (4:18-22)। नाओमी तथा रूत के रिश्ते के माध्यम से, और रूत तथा बोआज के विवाह से उत्पन्न संतान और वंशज आगे राजा दाऊद की और अंतत: यीशु मसीह की वंशावली के भागीदार हुए।

क. जब परमेश्वर के लोग मेल के वातावरण में काम करते हैं तब उसका राज्य आशीष पाता है (भजन संहिता 133:1)।

ख. यीशु के द्वारा, जो रूत का वंशज था, सम्पूर्ण जगत को आशीष मिली (1 कुरिंथियों 15:22)।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. अच्छी सलाहकार के महत्वपूर्ण गुण क्या होते हैं? क्या आप में वे गुण हैं? उनमें से कौनसा गुण प्रदर्शित करना आपके लिए सब से कठिन है? क्यों?

2. अच्छी सलाह-प्राप्तकर्ता के महत्वपूर्ण गुण क्या होते हैं? क्या आप में वे गुण हैं? उनमें से कौनसा गुण प्रदर्शित करना आपके लिए सब से कठिन है? क्यों?

प्रार्थना:

हे परमेश्वर पिता, मेरी सहायता कर कि मैं दया और प्रेम दिखाते हुए, और तूने जो ज्ञान-बुद्धि मुझे दी है उसे दूसरों के साथ बांटते हुए, एक अच्छी सलाहकार बनूं। कृपा करके मेरी अगुवाई कर कि मैं किसकी सलाहकार बनूं। मेरी सहायता कर कि मैं एक अच्छी सलाह-प्राप्तकर्ता भी बनूं ताकि उनसे सीख सकूं जो मुझे तेरे मार्गों की शिक्षा देते हैं। होने दे कि मेरे इस सलाह लेने-देने के रिश्तों के द्वारा, जो मैं अच्छी शिष्यता के लिए स्थापित करने जा रही हूं, सारे जगत को आशीष मिले।

10 प्रिस्किल्ला शिष्य-बनानेवाली

मुख्य पद: 2 तीमुथियुस 4:2

"तू वचन का प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह,
सब प्रकार की सहनशीलता, और शिक्षा के साथ उलाहना दे,
और डांट, और समझा।"

शास्त्रभाग, जिनमें प्रिस्किल्ला का उल्लेख है: प्रेरितों 18:1-4, 18-22, 24-26; रोमियो 16:3-4; 1 कुरिंथियों 16:19; 2 तीमुथियुस 4:19

प्रस्तावना

1. अक्विला इतालिया के पुन्तुस का यहूदी था। वह अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ आकर कुरिन्थुस में बस गया था (प्रेरितों 18:2)। वे, ईसवी सन 52 में, रोमी सम्राट क्लौदियुस के द्वारा सब यहूदियों को दी गई रोम से निकल जाने की आज्ञा के कारण देश से निकाले गए थे। प्रिस्किल्ला तथा अक्विला का नाम नया नियम में छः बार आया है। (उपरोक्त शास्त्रभाग देखिए।)

2. उनका नाम कभी भी अलग-अलग नहीं परंतु हमेशा एक जोड़ी के रूप में आया है।

3. चार स्थानों में, प्रिस्किल्ला का नाम पहले लिखा है। यह पुरुष-प्रधान समाज में किसी महिला को मिली एक विशिष्ठ पहचान थी।

4. नीचे दिए गए छः गुण बताते हैं कि प्रिस्किल्ला और अक्विला की सेवकाई हमें शिष्य बनानेवाली परिश्रमी कार्यकर्ता बनने के लिए क्या शिक्षा देती है।

शिष्य-बनानेवाली के छः गुण (जो प्रिस्किल्ला के जीवन में दिखाई देते हैं।)

1. **शिष्य-बनानेवाली को परमेश्वर के *वचन का अध्ययन करना और उसमें बने रहना* चाहिए (प्रेरितों 18:1-11, 26)।**

   क. यह बात स्पष्ट है कि प्रिस्किल्ला और अक्विला दोनों समर्पित मसीही थे।

   ख. परमेश्वर ने, अपनी योजना में, उनके तम्बू-बनाने के उद्यम का उपयोग उन्हें पौलुस से जोड़ने के लिए किया था। पौलुस ने, कुरिन्थुस में उनके घर में 18-महिनों तक रुकने के दौरान, उन्हें परमेश्वर के वचन की शिक्षा दी थी।

   ग. उसके बाद, वे स्वयं अप्पुल्लोस को सिखाने के योग्य हो गए थे। इस प्रकार, प्रिस्किल्ला, जो पहले एक शिष्या थी, बाद में सिखानेवाली या शिष्य-बनानेवाली बन गई थी।

   घ. प्रिस्किल्ला की सेवकाई इस बात का प्रमाण है कि वह मसीह के वचन में निरंतर बनी रही, और सचमुच उसकी शिष्या थी (यूहन्ना 8:31)। शिष्य-बनानेवाली स्वयं एक शिष्या और जीवन भर परमेश्वर के वचन की विद्यार्थिनी होती है।

   ङ जो पति-पत्नी एक साथ परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं, और उसकी शिक्षाओं के अनुसार जीवन जीते हैं, वे शिष्य-बनानेवालों की एक अच्छी जोड़ी बन सकते हैं।

2. **शिष्य-बनानेवाली को *पहुनाई करनेवाली* होना चाहिए (प्रेरितों 18:3, 18:26, 1 कुरिंथियों 16:19)।**

   क. प्रिस्किल्ला पहुनाई करनेवाली थी।

   - **पौलुस के लिए:** वे कुरिन्थुस में स्वयं ही शरणार्थी थे, फिर भी उन्होंने पौलुस को, उसकी प्रथम मिशनरी यात्रा के दौरान, आश्रय दिया।
   - **कलीसिया के लिए:** जब वे पौलुस के साथ इफिसुस को गए, तब वहां उन्होंने अपने घर का उपयोग मसीही आराधना के लिए और विश्वासियों को शिष्यता की शिक्षा देने के लिए किया।

- **अप्पुल्लोस के लिए:** जब उन्हें अप्पुल्लोस को परमेश्वर के मार्ग के विषय में और भी ठीक-ठीक बताने की आवश्यकता जान पड़ी, तब वे उसे अपने घर में ले गए।

ख. पहुनाई करना, मसीही उदारता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है (रोमियों 12:13)।

ग. पहुनाई करना साधारण दयालुता से बढ़कर है। इसका अर्थ है: सब से आखिरी, सब से छोटे, सब से नीचले, और खोए हुओं का अपनी संगति में स्वागत करना ताकि उन्हें परमेश्वर के महान प्रेम के बारे में बताएं।

घ. पहुनाई करने का उद्देश्य महान आदेश को पूरा करना है ताकि औरों के साथ मिलकर आराधना करें तथा शिष्यों को शिक्षा-सलाह देने की सुविधा हो सके। सुसमाचार सुनाने तथा शिष्य-बनाने के लिए अपना घर एक महत्वपूर्ण साधन है।

3. शिष्य-बनानेवाली को *सही और गलत को पहचाननेवाली* होना चाहिए (प्रेरितों 18:24-26)।

क. प्रिस्किल्ला और अक्विला अप्पुल्लोस की शिक्षा में पाई जानेवाली गलतियों को पहचान पाए थे।

- अप्पुल्लोस एक निडर व्यक्ति था, जो यीशु के विषय में उत्साह से और ठीक-ठीक सुनाता था। परंतु जब प्रिस्किल्ला और अक्विला ने उसे सुना, उन्होंने उसकी शिक्षा में गंभीर दोष पाया: वह मात्र यूहन्ना के बपतिस्मा के विषय में जानता था।
- वे उसे अपने घर ले गए और उसे सत्य के सम्पूर्ण ज्ञान की जानकारी दी।

ख. बहुत-से झूठे शिक्षक और झूठी शिक्षाएं आएंगी, परंतु शिष्या को वचन जानना अनिवार्य है ताकि गलतियों को पहचान सके और सत्य को समझा सके (मत्ती 24:11-14)।

ग. सही और गलत को पहचानना यह अवलोकन करने से बढ़कर है। यह परमेश्वर की ओर से पवित्र आत्मा की सहायता से मिलनेवाला वह प्रकटीकरण है जो सत्य और बुद्धि प्रदान करता है।

4. शिष्य-बनानेवाली को *समय का बलिदान* करने के लिए तैयार रहना चाहिए (प्रेरितों 18:24-26)।

क. पौलुस से सीखने के बाद, प्रिस्किल्ला और अक्विला उसके साथ मिशनरी बन गए थे। इस कार्य में उन्हें बहुत समय देने की आवश्यकता पड़ती होगी, जो अन्यथा उनके तम्बू बनाने के काम में लगाया जा सकता था।

ख. जब वे अप्पुल्लोस से मिले, तब वे इस बात के लिए तैयार थे कि उसे परमेश्वर का मार्ग ठीक-ठीक सिखाने में अपना समय देंगे।

ग. जब वे पौलुस के साथ इफिसुस में रहने गए, तब उन्होंने अपने घर को कलीसिया के लिए खोला। इसमें भी उन्हें अपना समय देने की आवश्यकता पड़ी होगी।

घ. शिष्याओं को फिर से शिष्य बनाने हैं। हमारे इस उत्पादन कार्य के तीन पहलु होते हैं: हमें लोगों को मसीह के लिए ***जीतना है,*** उन्हें परमेश्वर के वचन में ***बढ़ना है,*** और उन्हें औरों को शिष्य बनाने के लिए ***भेजना है।*** इन सब में बहुत समय देने की आवश्यकता होती है जिसके लिए शिष्याओं को तैयार रहना चाहिए। मसीह के कार्य के लिए हमें अपने समय का त्याग करना होगा।

5. शिष्य-बनानेवाली को *कष्ट सहने के लिए तैयार* रहना चाहिए (रोमियों 16:3; प्रेरितों 18:2)।

क. सताव तथा रोमी सम्राट के क्रूर आदेश ने प्रिस्किल्ला और अक्विला को रोम से निकाल बाहर किया था, परंतु यह उनके प्रभाव के कार्य-क्षेत्र को और विस्तृत करने में ही सहायक रहा। उन्हें कम-से-कम तीन बार स्थान बदलना पड़ा (रोम से कुरिंथुस, कुरिंथुस से इफिसुस, इफिसुस से रोम)। हर बार, अलग-अलग व्यक्तियों और नगरों की कथित आवश्यकताओं के अनुसार वे उत्साहपूर्वक उनके सहायक बने थे, यूं कहिए कि वे स्थानांतरण को परमेश्वर की बुलाहट समझते हुए अपनी जिम्मेवारी निभाते थे।

ख. प्रिस्किल्ला और उसका पति, जबकि शिष्य-बनाने की सेवकाई में लगे हुए थे, अपनी जीविका के लिए तम्बू बनाने का काम करते थे। आज भी हमें "तम्बू बनानेवालियों" की आवश्यकता है - ऐसी मसीही महिलाओं की जो अपने भरण-पोषण के लिए कुछ व्यवसाय

या नौकरी करते हुए सुसमाचार-प्रचार तथा शिष्य-बनाने की सेवकाई करेंगी। कोई औरों से आर्थिक सहायता लिए बिना भी शिष्य-बनाने का काम कर सकती है।

ग. ऐसा प्रतीत होता है कि रोम में, पौलुस के सहकर्मी होते हुए, उन्होंने उसे बचाने के लिए अपने आप को बड़े संकट में डाला था, अपने प्राण की जोखिम उठाई थी। पौलुस को बचाने के द्वारा, उन्होंने उस व्यक्ति के प्राण बचाए थे जो अन्यजातियों के लिए प्रेरित ठहराया गया था। इसलिए, जैसे पौलुस ने कहा है, अन्यजातियों की सारी कलीसियाएं उनकी आभारी थीं।

घ. शिष्याओं को क्लेशों की आशा करनी चाहिए - वे आएंगे ही! सेवकाई में जीवित रहने के लिए क्लेशों को सहने की आत्मिक तैयारी आवश्यक है।

6. शिष्य-बनानेवाली को *सेवकाई में औरों के साथ भागीदारी करने के लिए तैयार* रहना चाहिए (रोमियों 16:3,4)।

क. प्रिस्किल्ला और अक्विला ने एक-दूसरे के साथ तथा पौलुस, अप्पुलोस और तीमुथियुस के साथ सेवकाई की थी। वे अपने अधिकार का उपयोग करने में निस्वार्थी थे। ध्यान दीजिए कि प्रिस्किल्ला ने बड़ी सहजता से पुरुषों के साथ, विशेषत: अपने पति के साथ, काम किया था। उनका दृढ़ वैवाहिक जीवन और व्यवसाय में भागीदार होना सब मसीहियों के लिए एक अच्छा उदाहरण था।

ख. प्रिस्किल्ला और अक्विला ने अप्पुलोस के सलाहकार होने की भूमिका निभाई, थी जो बाद में मसीह की सेवकाई में बहुत सफल हुआ। शिष्य-बनानेवाली को नये अगुवों को बढ़ाने तथा उन्हें सलाह देने में खुले दिल की होना चाहिए, और उनकी सफलता से ईर्ष्या नहीं करनी चहिए।

ग. एक महिला की भूमिका अपने पति के साथ या अन्य पुरुषों के साथ भागीदारी की होती है। कभी भी उनसे उनके अधिकार छीनने की नहीं होती; परंतु उनकी सेवकाई को ऊंचा करने की और लाभ पहुंचाने की होती है। जो महिला सेवकाई में है उसे कभी भी उनकी जो नेतृत्व के स्थान पर है, विशेषकर पुरुषों की, सार्वजनिक रूप से आलोचना नहीं करनी चाहिए।

घ. एक-दूसरे के साथ सहयोग तथा भागीदारी करना एक ऐसा तरीका है जिससे हम परमेश्वर का प्रेम प्रदर्शित करते हैं और प्रगट करते हैं कि कलीसिया मसीह की देह है। पौलुस ने इस बात पर बल दिया है कि हम सहकर्मी हैं, यहां तक कि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं (1 कुरिंथियों 3:5-9)।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. अच्छी शिष्य-बनानेवाली पहुनाई करनेवाली होती है। यदि आपके पास सुंदर घर या बहुत पैसा ना भी हो तौभी पहुनाई करनेवाली बनने के लिए आप किन तरीकों का उपयोग कर सकती हैं?
2. अच्छी शिष्य-बनानेवाली को अपने समय का बलिदान करना होता है ताकि महान आदेश का पालन कर सके। वह कौनसा काम है जिसे किसी भिन्न तरीके से करने से आप के पास कुछ अधिक समय हो सकता है ताकि आप शिष्य-बनाने के कार्य में समय दे सकें?

प्रार्थना

प्रभु परमेश्वर, अच्छी शिष्य-बनानेवाली बनने में मेरी सहायता कर! मेरी सहायता कर कि मैं तेरे वचन से प्रेम करूं, दूसरों के साथ अच्छे संबंधों को बढ़ाऊं, और अपने समय का बलिदान करूं ताकि नये अगुवों को बढ़ाने की सेवकाई में आवश्यक समय दे सकूं। आमीन।।

टिप्पणियां

11 विन तथा विनर्स (WIN and the WIN-ners)

मुख्य पद: 2 तीमुथियुस 2:2

"और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं,
उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे,
जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

परिचय तथा दर्शन

1. **"विन" महिला प्रभाव नेटवर्क (Women's Impact Network) है।**
   - क. एइडा (एसोसीएशन फॉर इन्टर्नेशनल डिसाइपलशिप ऍड्वैन्स्मेन्ट) ने महिलाओं के लिए एक नई गतिविधि **विन (WIN)** का आरंभ किया है।
   - ख. इस गतिविधि का उद्देश्य मसीही महिलाओं को प्रति सप्ताह शिष्यता सीखने के उद्देश्य से एकत्रित होने का आह्वान देना है।
   - ग. वह प्रत्येक महिला जो विन के दिशा-निर्देशों के अनुसार दूसरी महिलाओं को सलाह-शिक्षा देने के कार्य में सहभागी होगी उसे **विनर (WIN-ner)** कहा जाएगा।

2. **दर्शन कथन (Vision Statement)**

   विन (WIN) ऐसी कल्पना करता है कि मसीही महिलाएं गहरी शिष्यता का आह्वान स्वीकार किए हुए, दूसरी महिलाओं के जीवन में सक्रिय आत्मिक निर्माण करने का संकल्प किए हुए हैं कि परिणामस्वरूप वे भी सशक्त शिष्य-बनानेवालियां बनेंगी।

3. मिशन कथन (Mission Statement)

क. विन के द्वारा चुनी गईं महिलाओं पर प्रभाव डालने का कार्य विन सम्मेलन में किया जाएगा ताकि वे मसीह यीशु की सच्ची शिष्या होने के लिए अपने समर्पण को स्थापित/पुन:स्थापित करें। तत्पश्चात्

ख. उन्हें साहित्य तथा व्यावहारिक योजनाओं के द्वारा तैयार किया जाएगा कि दूसरी महिलाओं पर सक्रिय आत्मिक निमार्ण* के लिए प्रभाव डालें - ताकि उन्हें मसीह के पास लाएं, और उन्हें समर्पित शिष्यता के लिए सलाह-शिक्षा दें।

4. पाठ्यक्रम:

विन शिष्यता मैन्युअल (WIN Discipleship Manual) विन सम्मेलनों के लिए पाठ्यक्रम होगा। यह एक मार्गदर्शन पुस्तिका है जिसमें शिष्यता, शिष्य बनाना, सुसमाचार-प्रचार, समूह-संचालन तथा सलाहकार के गुणों पर आधारित पाठ हैं। इसे ही विनर्स अपने समूहों में सलाह-शिक्षा देने के लिए उपयोग में लाएंगी।

5. योजना:

क. **विन सम्मेलनों (WIN Summits)** का आयोजन क्षेत्रीय स्तर पर किया जाएगा ताकि उन महिलाओं को प्रशिक्षित किया जाए जिन्हें इस गतिविधि में नेतृत्व लेने के लिए चुना गया होगा।

ख. ये सम्मेलन, विन शिष्यता मैन्युअल का उपयोग करते हुए उपस्थित महिलाओं पर प्रभाव डालेंगे और उन्हें व्यक्तिगत शिष्यता के लिए निर्देश देंगे।

ग. ये सम्मेलन, उपस्थित महिलाओं को आह्वान देंगे कि वे अपनी कलीसिया तथा समुदाय में महिलाओं के जीवन पर प्रभाव डालें कि वे भी शिष्य बनाने के दर्शन को स्वीकार करें। इन महिलाओं को, जो "विनर्स 3×3" की मुहिम में भाग लेंगी, **प्रथम पीढ़ी की विनर्स (First Generation WIN-ners)** कहा जाएगा।

* *आत्मिक निर्माण वह प्रक्रिया है जिससे एक शिष्या गुजरती है जबकि वह स्वेच्छा से अपना सारा ध्यान इस बात में लगाती है कि पवित्र आत्मा को अनुमति दे कि उसमें समर्पित शिष्यता के लिए उस आज्ञापालन को मजबूत करे जो आत्मिक अनुशासन का पालन करने से (प्रतिदिन परमेश्वर के वचन पर मनन, प्रार्थना, उपवास, और आराधना इत्यादि) तथा अपने सारे आपसी संबंधों में मसीह यीशु के प्रेम को प्रदर्शित करने से होता है।*

6. विनर्स 3×3 मुहिम (WIN-ners' 3×3 Campaign) - विन की सलाह-शिक्षा शृखला (A WIN Mentoring Chain)

क. प्रथम पीढ़ी की विनर्स में से प्रत्येक महिला, कम-से-कम तीन महिलाओं को इस समूह में जोड़ेगी, और यही दर्शन उनके मन में बैठाएगी (अर्थात् यही कि तीन महिलाओं को मसीह के लिए जीतना तथा उन्हें शिष्यता सिखाना)। इन तीन को **द्वितीय पीढ़ी की विनर्स (Second Generation WIN-ners)** कहा जाएगा।

ख. द्वितीय पीढ़ी की विनर्स में से भी प्रत्येक इसी प्रकार सलाह-शिक्षा देने के कार्य को आगे बढ़ाएगी और तीन-तीन महिलाओं को चुन कर यही दर्शन उनके भी मन में बैठाएगी (अर्थात् यही कि तीन महिलाओं को मसीह के लिए जीतना तथा उन्हें शिष्यता सिखाना)। इन्हें **तृतीय पीढ़ी की विनर्स (Third Generation WIN-ners)** कहा जाएगा।

ग. सारी विनर्स के द्वारा यह सलाह-शिक्षा देने की शृंखला आगे चलाई जाती रहेगी ताकि कलीसियाओं में शीघ्रता से होनेवाली वृद्धि को जोड़ सकें, और अंततः परमेश्वर के राज्य में वृद्धि हो।

7. विन - एक निरंतर चलनेवाली सेवकाई

क. सारी विनर्स अपने-अपने प्रांत की **विन संयोजक (WIN Coordinator)** की देखरेख के अंतर्गत एक नेटवर्क में सम्मिलित होंगी।

ख. सारे प्रांत की विन संयोजक अपने-अपने प्रांत में कार्य करते हुए एइडा की **विन संचालक (WIN Director)** के नेतृत्व में एक राष्ट्रीय संघ को विकसित करेंगी।

ग. विन ऐसा नेटवर्क बनेगा जो एइडा का एक राष्ट्रीय मंच होगा जिसके तहत भविष्य में मसीही महिलाओं के लिए शिष्यता हेतु बाइबल आधारित विषयों पर प्रशिक्षण का आयोजन किया जाता रहेगा।

घ. एइडा, परमेश्वर के अनुग्रह एवं अगुवाई में, विन का विस्तार भारत देश के बाहर अन्य देशों में भी करने का दर्शन देखता है।

उपसंहार

"प्रिय विनर्स, हम आपका स्वागत करते हैं कि आप हमारे उस दर्शन में भागीदार बनें जो हमने कलीसिया की महिलाओं के लिए देखा है कि वे प्रभु के महान आदेश, "जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ . . . और उन्हें . . . मानना सिखाओ" (मत्ती 28:19), को पूर्ण करने में सक्रिय कार्यकर्ता बनें। जबकि आप प्रार्थनापूर्वक तैयार होती हैं और प्रभु की बुलाहट के प्रति अपना समर्पण करती हैं, हम आपको अपनी प्रार्थनाओं का आश्वासन देते हैं। आइए, परमेश्वर के अनुग्रह से, हम आगे बढ़ें।"

– ***विन का दर्शन देखनेवाले साथी***

चर्चा के लिए प्रश्न

1. "आत्मिक निर्माण" का अर्थ क्या है?
2. आप इस समय आत्मिक निर्माण में किस प्रकार सम्मिलित हैं, और विन में आपकी सहभागिता किस प्रकार का अंतर लाएगी (उपयोगी ठहरेगी)?
3. अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए कि विनर्स 3×3 मुहिम (WIN-ners' 3×3 Campaign) का अर्थ क्या है?

प्रार्थना:

प्रभु मुझे विश्वासयोग्य "विनर" बना। मुझे मसीह की सच्ची शिष्या बना, जैसा मैंने, "विन" शिष्यता मैन्युअल का उपयोग करते हुए, तेरे वचन से सिखा है। मेरी सहायता कर कि इसे मैं दूसरी महिलाओं को अच्छी रीति से सिखा सकूं, जो फिर स्वयं भी दूसरों को सिखाने के योग्य होंगी।

12 विन समूह का नेतृत्व करना (Leading a WIN Group)

मुख्य पद: 1 कुरिंथियों 2:13

"जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परंतु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं।"

प्रस्तावना:

पिछले पाठ ने "विन" अर्थात् महिला प्रभाव नेटवर्क के दर्शन को स्पष्ट किया है। अब इस पाठ का उद्देश्य विन समूह का नेतृत्व कैसे करे यह ठीक-ठीक सिखाना है।

विन समूह का नेतृत्व कैसे करें?

1. **प्रति सप्ताह मिलने के लिए स्थान और नियमित समय का चुनाव कीजिए।**

   क. यदि संभव हो तो अपने घर में ही मिलिए; स्मरण रखिए कि पहुनाई उन पद्धतियों में से एक थी जिनका उपयोग प्रिस्किल्ला ने शिष्य-बनानेवाली होने में किया था (प्रेरितों के काम 18:26)।

   ख. किसी आकस्मिक घटना के अलावा कभी भी अपने समूह की सभा में जाने से मत चूकिए। अपने समूह की सदस्याओं से कहिए कि वे इस बात की बड़ी सावधानी बरतेगी कि उस समय को किसी भी अन्य काम में नहीं देंगी, और उसे बहुमूल्य समय के रूप में सुरक्षित रखेंगी (इफिसियों 5:16)। आप भी विश्वासयोग्यता का आदर्श प्रस्तुत कीजिए।

   ग. यदि समय और स्थान को बदलना बहुत आवश्यक हो तो निश्चित कर लीजिए कि, संभव हो सके तो, उसकी सूचना प्रत्येक सदस्या को पहले से दे दी जाए।

घ. प्रयास कीजिए कि बैठने की व्यवस्था प्रत्येक जन के लिए आरामदायक हो ताकि शारीरिक असुविधा से किसी का ध्यान भंग न हो; इतने पास-पास बैठिए कि प्रत्येक जन आराम से बातचीत में भाग ले सकेगी।

ङ ऐसी व्यवस्था कीजिए कि ध्यान भंग करनेवाली अन्य बातों की संभावना कम हो। आवश्यक हो सकता है कि इस समय के दौरान परिवार के बच्चे और अन्य सदस्यों को जो वस्तुएं आवश्यक हो सकती हैं उनकी व्यवस्था पहले से कर दी जाए।

2. तैयार रहिए।

क. विन शिष्यता मैन्युअल से जो पाठ आप सिखाने वाली होंगी उसका पहले से अध्ययन कर लिजिए (2 तीमुथियुस 2:15)।

ख. पाठ में आनेवाले वचनों के लिए अपनी बाइबल में चिन्ह लगा लीजिए ताकि आप उन्हें झटपट खोल सकें।

ग. आप जिन बातों को अच्छे से सिखाना चाहती हैं उन्हें लिख लीजिए।

घ. विन समूह के मिलने से पहले अपने लिए सयम निश्चित रखिए कि पढ़ाए जानेवाले पाठ पर एक बार पुन: विचार कर ले।

ङ स्वयं एक अच्छा आदर्श प्रस्तुत कीजिए। आप सिखाने के लिए अच्छे से तैयारी करेंगी तो उससे आपके सदस्य भी सीखेंगे कि उन्हें भी सभा के लिए अच्छे से तैयार होना चाहिए (2 तीमुथियुस 4:2)।

3. सभा का आरंभ और अंत प्रार्थना से कीजिए।

क. इससे सभा के लिए एक अच्छा मन तैयार होगा और सीखनेवाली महिलाओं का ध्यान यीशु पर केंद्रित होगा (इब्रानियों 12:2)।

ख. अच्छे से याद रखिए कि यह प्रार्थना-सभा नहीं है। इसमें की जानेवाली प्रार्थना का मुख्य विषय अपने पाठ को सीखने और उसके द्वारा समर्पित शिष्यता में वृद्धि करने की आशीष मांगना ही हो। सच्ची शिष्यता की वृद्धि में रुकावट बननेवाली बातों को दूर करने के लिए तथा मसीही जीवन में प्रभावकारी बनने के लिए प्रार्थना कीजिए।

ग. यदि किसी के पास प्रार्थना के लिए कोई अन्य अति आवश्यक विनती हो तो उसके साथ विन समूह के पाठ के बाद प्रार्थना कीजिए।

घ. सभा की समाप्ति की प्रार्थना में सदस्य महिलाओं के लिए आशीष मांगना याद रखिए और परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए कि जब वे यीशु

की गवाही देती हैं, और औरों को शिष्य बनाने का प्रयास करती हैं, तो वह उन्हें फलदायी बनाए।

ङ सप्ताह भर अपने विन समूह की सदस्याओं के लिए, उनकी विशिष्ठ आवश्यकताओं और विनतियों के लिए प्रार्थना करना याद रखिए (इफिसियों 6:18)। उन्हें भी प्रोत्सहित कीजिए कि वे आपके और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें।

4. प्रत्येक कक्षा का आरंभ पिछले पाठ पर पुनः अवलोकन करते हुए कीजिए।

क. सीखने के लिए दोहराना एक अच्छा उपाय है।

ख. महिलाओं ने पिछले सप्ताह का पाठ सीखा लिया है यह निश्चित कर लीजिए; यदि नहीं तो संभवतः आपको अपने सिखाने की पद्धतियों में सुधार/बदलाव करने की आवश्यकता होगी।

ग. समूह की सदस्याओं को अवसर दीजिए कि वे बताएं कि सीखी हुई बातों को अपने व्यवहार में कैसे लाती हैं। उनकी सफलताओं की सराहना कीजिए; उनकी चुनौतियों के प्रति चिंता प्रगट कीजिए (रोमियों 12:15)।

5. स्मरण रखिए कि आपको प्रचारक नहीं परंतु शिक्षक बने रहना है।

क. आप *विन शिष्यता मैन्युअल* से सिखाएंगी, परंतु यह सिखाना उपदेश देने जैसा न हो कि बीच में कोई प्रश्न न कर सके।

ख. प्रश्न करने का और सदस्याओं को अपने विचार प्रगट करने का समय दीजिए; उनके विचार क्या हैं पूछिए।

ग. उनके विचारों का, यदि उन्हें धीरे से सुधारने की आवश्यकता हो तौभी, आदर कीजिए (इब्रानियों 5:2)।

घ. कभी भी अपने समूह के सदस्यों का मजाक न उड़ाइए या उन्हें लज्जित करनेवाली बात न कहिए (फिलिप्पियों 2:3)।

6. विषय पर बने रहिए; विषय से हटकर इधर-उधर बहक मत जाइए।

क. जब सदस्यों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तब सहज ही विषय से लागू न होनेवाली बातों पर चर्चा आरंभ हो जाती है।

ख. यदि ऐसा होता है तो समूह की अगुवाई कीजिए कि वापस विषय पर आ जाए - स्मरण रखिए कि आप के लिए आवश्यक है कि *विन शिष्यता मैन्युअल* के विषय पर ही केंद्रित रहें।

ग. यदि चर्चा में किसी के द्वारा उभारा जानेवाला कोई विषय महत्वपूर्ण लगे तो, जिसके द्वारा वह उभारा गया हो उस सदस्या से, पाठ के समाप्त हो जाने बाद उस पर बात कीजिए।

घ. सावधान रहिए कि बातचीत करने में एक ही सदस्या को हावी न होने दिया जाए। यदि आवश्यकता पड़े तो नरमी से बीच में रोक दीजिए ताकि सब को चर्चा में भाग लेने का अवसर मिले (रोमियों 12:10)।

उपसंहार

इस सेवकाई की सफलता के लिए विनर्स 3×3 मुहिम के प्रति आपकी वचनबद्धता अति आवश्यक है। इस भूमिका को निभाना प्रभु के सम्मुख गंभीर परंतु आनंदमय जिम्मेवारी है। वह आपको उन सारे वरदानों से समर्थ बनाएगा जिनकी आपको इस कार्य में सफल होने के लिए आवश्यकता है। जिन्हें परमेश्वर ने इस सेवकाई के लिए बुलाया है, उन्हें वही निश्चित रूप से सक्षम बनाएगा ताकि वे परमेश्वर के उद्देश्य को पूर्ण कर सकें।

चर्चा के लिए प्रश्न

1. सीखने की प्रक्रिया के लिए पिछले पाठ की विषय-वस्तु को दोहराना क्यों महत्वपूर्ण है?
2. अपने अध्ययन के समय में, "विन" समूह को "विषय पर" बने रखने के लिए आप एक अगुवे के रूप में किन बातों को कर सकती हैं?

प्रार्थना

प्रभु, मैं विश्वास करती हूं कि तू ने मुझे शिष्य बनाने के लिए, और विन समूह की अगुवा बनने के लिए बुलाया है। अब मेरी सहायता कर कि एक प्रभावी सलाहकार होने के लिए मुझे ज्ञान, धीरज, संवेदनशीलता और उत्साह प्राप्त हो। हम सब की सहायता कर कि हम बुद्धि में वृद्धि करें जबकि हम शिष्यता के कार्य के प्रति अपना समर्पण करते हैं। आमीन!

विनर्स 3X3 मुहिम प्रतिज्ञा

प्रति,
मसीह की समर्पित शिष्याओं को,
जो निश्चय करती हैं कि तीन महिलाओं के जीवन में सक्रिय आत्मिक निर्माण का उत्तरदायित्व लेंगी, निम्नलिखित सुझाव दिए जाते हैं:

1. प्रार्थना में समय दीजिए कि गहरी शिष्यता की दिशा में सलाह-शिक्षा देने के लिए, किन्हीं 3 महिलाओं का चुनाव करने परमेश्वर आपकी अगुवाई करे, ताकि वे भी शिष्य-बनाने में समर्थ बनाई जाएं।
2. चुनी गईं महिलाओं में से प्रत्येक के लिए कम-से-कम एक सप्ताह प्रतिदिन आग्रह की प्रार्थना कीजिए कि अर्थपूर्ण शिष्यता के लिए परमेश्वर उनके मनों को तैयार करे।
3. उनमें से प्रत्येक से अकेले में बात कीजिए ताकि उन्हें ईश्वरीय चिंता एवं पवित्र साहस के साथ शिष्यता की अनिर्वायता समझा सकें।
4. उनमें से प्रत्येक के साथ प्रार्थना कीजिए और उनकी सहमति प्राप्त कीजिए कि वे आपके तथा अन्य 2 बहनों के साथ मिलकर *विन शिष्यता मैन्युअल* से अध्ययन करेंगी।
5. उन तीनों को एक साथ प्रार्थना करने, तथा आपके विन समूह में शिष्यता की साप्ताहिक कक्षाओं में उपस्थित होने हेतु वचनबद्ध होने के लिए आमंत्रित कीजिए।
6. प्रार्थनापूर्वक *विन शिष्यता मैन्युअल* से अध्ययन पूरा कीजिए ताकि वे तीन भी समर्पित शिष्याएं बनें, और प्रत्येक अन्य 3 के साथ विन शिष्यता समूह आरंभ करने का निश्चय करें।

प्रभु मैं स्वीकार करती हूं कि –

1. तूने मेरे पापों के लिए क्रूस पर अपने प्राण दिए-और मेरी पड़ोसनों के लिए भी *(जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे पापों के लिए मरा। - रोमियों 5:8)*।
2. जब मैंने तुझ में विश्वास किया तब तूने मेरा उद्धार किया-जब मेरी पड़ोसने तेरी ओर मन फिराएंगी तब तू उनका भी उद्धार करेगा। *(देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा। - प्रकाशितवाक्य 3:20)*
3. इसलिए कि तूने मेरा उद्धार किया है, अवश्य है कि मैं तेरी गवाह बनूं ताकि अपनी पड़ोसनों को उद्धार के लिए तेरे पास लाऊं *(मैंने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया है ताकि तुम जाकर फल लाओ। - यूहन्ना 15:16)*
4. यदि मैं तेरे वचन में बनी रहूंगी तो मैं तेरी सच्ची शिष्या बनी रहूंगी *(यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे। - यूहन्ना 8:31)*
5. मेरे लिए तेरा महान आदेश है कि मैं तेरे लिए शिष्य बनाऊं *(जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ - मत्ती 28:19)*।
6. मेरे लिए तेरी इच्छा है कि मैं उन 3 महिलाओं के जीवन में आत्मिक निर्माण करने का उत्तरदायित्व लूं, जो स्वयं भी शिष्य-बनाने में समर्पित बनेंगी और अन्य 3 के साथ विन समूह का आरंभ करेंगी *(एकदूसरे को शान्ति दो, और एक दूसरे की उन्नति के कारण बनो। - 1 थिस्स. 5:11)*।
7. मुझे इस काम को तुरंत आरंभ करना है कि मैं प्रार्थना करूं और महान आदेश के दोनों उत्तरदायित्वों को पूरा करूं: खोए हुओं को जीतना और शिष्य बनाना *(वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता। - यूहन्ना 9:4)*
8. मैं अभी इसी समय तुझ से यह वाचा बांधती हूं कि पवित्र आत्मा पर निर्भर रहते हुए, मैं एक विश्वासयोग्य विनर बनूंगी, और तेरे और इस सेवकाई के प्रति जबाबदेही रहूंगी। इस उद्देश्यपूर्ण कार्य को पूरा करने की मैं प्रतिज्ञा करती हूं।

हस्ताक्षर ..... दिनांक .....

- 3 महिलाएं जिन्हें मैं मसीह यीशु की शिष्या बनाने के लिए सलाह-शिक्षा देना चाहती हूं:

1. .....
2. .....
3. .....

परिशिष्ट

सहायक वेब-साइट्स

http://coregroups.org.
Core Discipleship. Resources for discipleship groups.

http://www.telintl.org.
Training Evangelistic Leadership. Books and resources for sale.

http://www.navigators.org.
Navigators. Resources for discipleship and Bible studies.

http://www.gospelcentereddiscipleship.com.
Articles and resources on discipleship.

http://www.discipleshiplibrary.com.
Audio and pdf articles and curriculum on discipl

http://www.disciplers.org.
Free discipleship lessons.

आशाजनक सेवकाइयां

यदि आप एक प्रभावकारी आत्मा-जीतनेवाली महिला बनने हेतु किसी विशिष्ट सेवकाई के लिए परमेश्वर से अगुवाई पाने की खोज में हैं, तो विन/एइडा कार्यालय में महिला सेवकाइयों के "एइडा पैकेज" पुस्तक को प्राप्त करने हेतु संपर्क कीजिए।

संपर्क करने के लिए:

Address: AIDA
C-1/1493, Vasant Kunj,
New Delhi-110 070, INDIA

E-mail: *stephenrawate@gmail.com*

Phone: *011-26122930, or 9871639100*